तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

जून-2021 रु.5/-

तिरुमल श्रीहरि के ज्येष्ठाभिषेक
(२०२१, जून २२ से २४ तक)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

कार्वेटिनगरम् श्री वेणुगोपालस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२०२१, जून ०२ से १० तक

०२-०६-२०२१ बुधवार
दिन : ध्वजारोहण - रात : महाशेषवाहन

०३-०६-२०२१ गुरुवार
दिन : लघुशेषवाहन - रात : हंसवाहन

०४-०६-२०२१ शुक्रवार
दिन : सिंहवाहन - रात : मोतीवितानवाहन

०५-०६-२०२१ शनिवार
दिन : कल्पवृक्षवाहन - रात : सर्वभूपालवाहन

०६-०६-२०२१ रविवार
दिन : पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव - रात : गरुडवाहन

०७-०६-२०२१ सोमवार
दिन : हनुमद्वाहन - रात : गजवाहन

०८-०६-२०२१ मंगलवार
दिन : सूर्यप्रभावाहन - रात : चंद्रप्रभावाहन

०९-०६-२०२१ बुधवार
दिन : रथ-यात्रा - रात : अश्ववाहन

१०-०६-२०२१ गुरुवार
दिन : चक्रस्नान - रात : ध्वजावरोहण

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलोऽभ्यनुनादयन्॥
(- श्रीमद्भगवद्गीता १-१९)

पाण्डव वीरों के उस भयानक शब्द ने आकाश और पृथ्वी को भी गुँजाते हुए धार्तराष्ट्रों के यानी आप के पक्षवालों के हृदय विदीर्ण कर दिये।

श्री आञ्जनेयाय मङ्गलाष्टकम्

गौरीशिववायुवराय अञ्जनिकेसरिसुताय च।
अग्निपञ्चकजाताय आञ्जनेयाय मङ्गलम्॥१॥

वैशाखेमासि कृष्णायां दशम्यां मन्दवासरे।
पूर्वाभाद्रप्रभूताय आञ्जनेयाय मङ्गलम्॥२॥

पञ्चाननाय भीमाय कालनेमिहराय च।
कौण्डिन्यगोत्रजाताय आञ्जनेयाय मङ्गलम्॥३॥

सुवर्चलाकलत्राय चतुर्भुजधराय च।
उष्ट्रारूढाय वीराय आञ्जनेयाय मङ्गलम्॥४॥

दिव्यमङ्गलदेहाय पीताम्बरधराय च।
तप्तकाञ्चनवर्णाय आञ्जनेयाय मङ्गलम्॥५॥

करुणारसपूर्णाय फलापूपप्रियाय च।
माणिक्यहारकण्ठाय आञ्जनेयाय मङ्गलम्॥६॥

भक्तरक्षणशीलाय जानकीशोकहारिणे।
सृष्टिकारणभूताय आञ्जनेयाय मङ्गलम्॥७॥

रम्भावनविहाराय गन्धमादनवासिने।
सर्वलोकैकनाथाय आञ्जनेयाय मङ्गलम्॥८॥

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,000/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१000/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५२ जून-२०२१ अंक-०१

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
आचार्य के.राजगोपालन्

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिएः
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

विषयसूची

रामभक्त हनुमान	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया	07
अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामी	श्रीमती आर.गायत्री	10
श्रीरंगम रंगनाथस्वामी मंदिर	डॉ.एच.एन.गौरी राव	13
श्री वेंकटेश सुप्रभात	श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी	18
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	21
मंगलाशासन पाशुरम्	श्री के.रामनाथन	24
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
सनातन साहित्य में स्त्री	डॉ.एस.पी.वरलक्ष्मी	31
श्रीमद्भगवद्गीता	श्री बी.राजीव रत्न	34
लौकी से स्वास्थ्य का सौभाग्य	डॉ.एस.हरि	37
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	38
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	41
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	44
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	47
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	49
बालनीति - कारण और कार्य	श्रीमती प्रेमा रामनाथन	50
चित्रकथा - बालहनुमान	डॉ.एम.रजनी	52
क्विज	कुमारी एन.प्रत्यूषा	54

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - तिरुमल श्रीहरि के ज्येष्ठाभिषेक
चौथा कवर पृष्ठ - जापालि आंजनेयस्वामी (तिरुमल)

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

गो-आधारित खाद्य पदार्थों से नैवेद्य

‘‘गावो विश्वस्य मातरः’’ ऐसा वेदों ने स्तुति की जाती है। इसीलिए गाय को सिर्फ भारत देश के लिए ही नहीं पूरे विश्व की ‘माता’ के रूप में वेद प्रतिपादित करते हैं। भारत देश वेदभूमि एवं कर्मभूमि है। सारे कर्म वेद प्रतिपादित हैं। ऐसे कर्म दो प्रकार के हैं। वे श्रौत और स्मार्थ। ऐसे कर्मों के लिए गाय अत्यावश्यक है। कारण यही है कि इंद्रादि देवताओं को दिए जानेवाले हाविर्भाग सभी गोघृत पर आधारित होते है। सर्व कर्मों के लिए आधारभूत द्रव्य ‘घृत’ (घी) ही है। और साथ-साथ हमारा देश भी एक कृषि प्रधान देश है। किसान-गाय का अटूट लगाव है। गोमाता में सभी देवी-देवता हैं। हमारी हिंदू परंपरा में गोपूजा का विशेष महत्व है। संक्रांति त्योहारों के दौरान गाय का भी बहुत महत्व है। श्रीकृष्ण परमात्मा को गाय के साथ अटूट संबंध है। तिरुमल में स्वामीजी के प्रादुर्भाव के पहले भगवान श्रीनिवास बिल से बाहर आकर गाय को बचाया।

श्री वेंकटेश्वरस्वामी अलंकार प्रिय, भक्तवत्सल और भोजन प्रेमी भी हैं। कई भक्त स्वामीजी के प्रसाद की तैयारी केलिए विभिन्न प्रकार के गो-आधारित खाद्य पदार्थों का वितरण कर रहे हैं। किसी भी रसायन (कीटनाशक द्रव्य) के उपयोग के बिना गाय का गोबर, गोमूत्र, नीम के पत्ते से द्वारा जैविक रूप से उगाए गए खाद्य पदार्थों को उत्पन्न किया जाता है। इस तरह से उगाए गए खाद्य पदार्थों से मिलने वाले पोषक तत्व, विटामिन और खनिजों से भरपूर होते हैं। गो-आधारित खाद्य पदार्थों से पका हुआ नैवेद्य भगवान जी को समर्पण करने के बाद, भक्त महाप्रसाद के रूप में प्राप्त करना सौभाग्य माना जाता है। भक्तों पर सदैव स्वामीजी की कृपा और करुणा बरसती रहती है।

रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से आहार के पदार्थ के साथ-साथ भू-जल भी दूषित होता है। ये गो-आधारित खाद्य पदार्थ हमें किसी नुकसान के बिना स्वस्थ रहने में मदद करते हैं। गो-आधारित आहार पदार्थों का अधिक विनियोग करके तंदुरुस्ति बढाकर सुख जीवन पाने का अवकाश मिलता है। हमारे सांप्रदाय में गोपूजा-गोसेवा करना अत्यंत प्रशंसनीय बताया गया है। इनके द्वारा समस्त पापों का नाश होने के साथ-साथ शुभ भी पहुँचते हैं।

गोविंदा! गोविंदा!!

हिंदू धर्म में अनगिनत देवी देवता की पूजा होती है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार ३३ कोटि देवी देवता है। उनमें से अधिकांश ब्रह्म, विष्णु, महेश के अवतार है। सभी देवताओं में अति लोकप्रिय देव भगवान हनुमान जी भी है। हनुमान जी के जन्म के बारे में उनके बचपन की शरारते और सबसे बढ़कर भगवान राम के प्रति उनकी भक्ति की अनगिनत कहानियाँ है।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्त एतैः चिरंजीविनः।।

इस श्लोक में बताया है कि जगत के सात चिरंजीवों में हनुमान भी एक है। राम भक्त चिरंजीव हनुमान जी का जन्म (प्रादुर्भाव) चैत्र शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार के दिन वायु देव के अंश और माता अंजनी के गर्भ से हुआ था। नंदी के बिना शिवालय संभव नहीं, ऐसे ही सेवक हनुमान के बिना राम मंदिर संभव नहीं। ''भक्तों के बिना भगवान अधूरे'' इस उक्ति सर्वथा यथार्थ साबित होती है। प्रभु राम ने ही हनुमान जी को चिरंजीवी होने का वरदान दिया है।

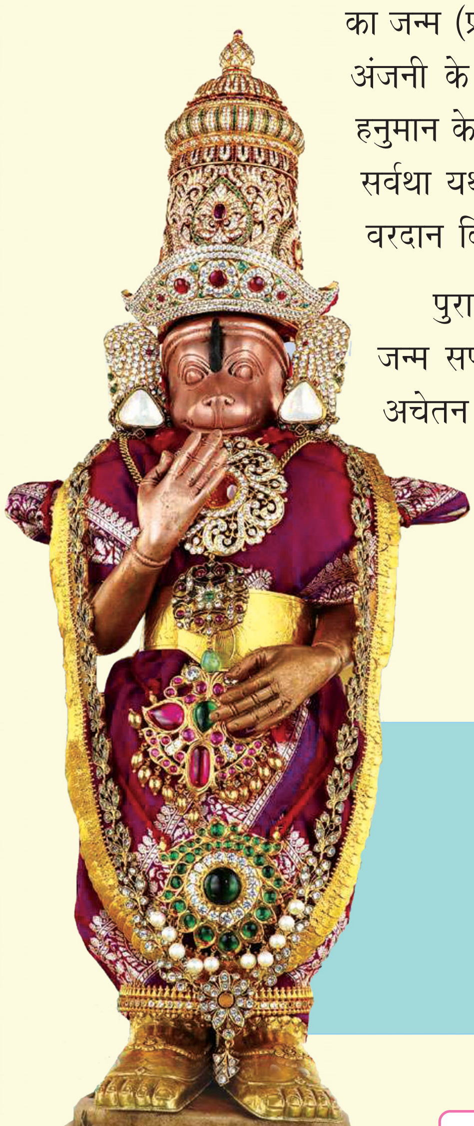

पुरातन काल की बात है श्रीहरि के अवतार प्रभु श्रीराम अपना जीवन और जन्म सफल करके परम पद की ओर जा रहे थे। अयोध्या के सभी चेतन और अचेतन उनके साथ लीला विभूति को छोड़कर नित्य विभूति में जा रहे थे। इस समय सिर्फ एक हनुमान जी ने प्रभु राम के साथ नित्य विभूति में जाने की मना कर दी। हनुमान जी ने राम को कहा-

स्नेहो मे परमो राजन त्वयी नित्यं प्रतिष्ठितं।
भक्तिश्च नित्यावीर भावो नान्यत्र गच्छती।।

रामभक्त हनुमान

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया
मोबाइल - ९८२५११३६३६

अर्थात् हे रघुवीर आपके अवतार काल में आपके साथ रहकर आपके प्रकाश गुणों का मैं स्नेही बन गया हूँ इसीलिए जिस भूमि पर आपके साथ समय बिताया है उस भूमि के अनुभव और आनंद को छोड़कर मैं कहीं नहीं जाना चाहता हूँ। राम ने सेवक हनुमान की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और भूलोक में चिरंजीव होने का वरदान भी दे दिया। हनुमान ने यह भी कहा कि इस संसार में जब तक राम कथा चलती रहेगी तब तक मैं भूलोक में निवास करूँगा।

त्रेतायुग में तो भगवान राम के साथ हनुमान जीते ही, द्वापरयुग में भी हनुमान जी की वीर भीमसेन और अर्जुन से भी भेंट हुई थी, और कलियुग में हम सब साक्षी है हनुमान जी सब जगह पर पूजित हैं चिरंजीव है। इसीलिए तो समग्र भारतवर्ष हनुमान जयंती बड़ी धूम-धाम और उत्साह पूर्वक मनाते हैं। विशेष बात तो यह है कि समग्र गुजरात सौराष्ट्र और अन्य प्रदेश में हर गली हर मोहल्ले में हनुमान जी का मंदिर स्थापित है। शनिवार और मंगलवार के दिन हनुमान चालीसा, सुंदरकांड और राम दरबार से गूंज उठते हैं। सभी भक्त लोग अपना कष्ट मिटाने और मनोकामना पूर्ती करते है। उस दिन भगवान जी को आंकडा फूल की माला, चमेली तेल, सिंदूर और उड़द हनुमान जी को समर्पण करते हैं।

पवनपुत्र का नाम 'हनुमान' कैसे हुआ? रसप्रद घटना...

अंजनी पुत्र के कई सारे नाम है मारुति, पवनपुत्र, आंजनेय, महावीर, केसरी नंदन... लेकिन 'हनुमान' नाम सबसे प्रचलित है एक समय की बात है। बालक मारुति को बहुत भूख लगी थी उसकी नजर आकाश में गई तो गोल सूर्य को फल समझकर खाने के लिए आगे बढ़े। सूर्यग्रहण का दिन था राहु भी सूर्य को खाने के लिए दौड़े तब मारुति ने सूर्य को छोडकर राहु को पकडने का प्रयत्न किया। राहु मारुति की पकड़ से छूट गए और इंद्र की शरण में चले गए तब इंद्र ने राहु की सहायता करने हेतु मारुति के मुंह पर (हनु पर) वज्र का

प्रहार किया, मारुति की हनु (दाढी) टूट गयी तब से मारुति का नाम 'हनुमान' पड़ा।

हनुमान जी के जन्म की रसप्रद घटना...

पौराणिक कथा के अनुसार हनुमान जी की माता अंजनी पूर्वजन्म में पुंजिकस्थला नाम की अप्सरा थी, चंचल स्वभाव के कारण उन्होंने तपस्या करते हुए एक ऋषि के साथ अभद्रता कर दी। जिससे गुस्से में आकर ऋषि ने श्राप दे दिया की तू वानरी बन जा। पुंजिकस्थला ने ऋषि से क्षमा याचना की तब उसी ने दया दिखाते हुए कहा कि भगवान शिव के एक अवतार को जन्म देने के बाद ही श्राप का प्रभाव खत्म होगा।

पुंजिकस्थला ने धरती पर जन्म लिया वहा उसका नाम अंजनी था यहाँ उन्हें वानर राजा केसरी से प्यार हुआ। विवाह के बाद उन्हेंने शिव को प्रसन्न किया। शिव ने धन्य खीर का एक हिस्सा लेने के लिए एक बाज पक्षी को दशरथ के महल में भेजा। वहाँ राजा दशरथ अपनी पत्नियों को खीर वितरित कर रहे थे ताकि उन्हें संस्कारी बच्चे हो सके। अंजना के लिए लाये गये खीर का अंजना ने सेवन किया उस प्रभाव

से हनुमान का जन्म हुआ। इस बालक का नाम पवन पुत्र रखा गया। पवन देव ने हनुमान जी को आशीर्वाद दिया और उन्हें हवा की गति के साथ यात्रा करने की शक्तियां प्रदान की। श्राप से मुक्त होकर अंजना अपने मूल स्वरूप अप्सरा बन कर स्वर्ग लौट गए। जैसे ही हनुमान जी बडे हुए उनकी ईश्वरीयता आगे बढ़ी सभी ने उनकी ईश्वरीयता का स्वीकार कर लिया और जहाँ तक देवताओं ने भी उनके आगे सिर झुकाने लगे।

हनुमान जी का जन्म एक कारण स्वरूप है...

एक बार श्रीहरि विष्णु और शिव जी के बीच हरिफाई हुई जिसमें श्रीहरि विष्णु की जीत हुई वचन के अनुसार शिव ने कहा कि मैं आपका सेवक बनूंगा। घटना को साकार करने के लिए श्रीहरि विष्णु ने त्रेतायुग में राम अवतार लिया और शिव जी एकादश रुद्र अवतार हनुमान जी के रूप में अवतरित होकर, प्रभु श्रीराम की अनगिनत अविरल सेवा की। इसीलिए कह सकते हैं कि हनुमान जी का जन्म एक कारण स्वरूप है।

हनुमान जी को सिंदूर क्यों चढ़ाया जाता है?

कथा के अनुसार एक बार माता सीता अपनी मांग में सिंदूर लगाते हुए उसे देख लिया उन्होंने सिंदूर लगाने का कारण पूछा, तो सीता जी ने बताया कि इससे भगवान राम की उम्र बढ़ाती है यह जानने के बाद हनुमानजी ने अपने पूरी शरीर पर सिंदूर लगा दिया ताकि भगवान राम को अमरत्व प्राप्त हो। इस घटना के बाद हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाया जाता है।

महाभारत के अनुसार...

हनुमान जी और भीम दोनों भाई थे क्योंकि दोनों के पिता पवन देव हैं महाभारत में हनुमान जी दो बार दिखाई देते हैं एक बार जब जंगल में भीम से मिलते हैं और दूसरी बार कौरव के साथ युद्ध के दौरान हनुमान जी अर्जुन के रथ पर ध्वज में सवार थे।

ब्रह्मांड पुराण के अनुसार...

एक ऐसी कथा मिलती है कि हनुमान जी के पसीने की बूंद से एक पुत्र का जन्म हुआ जिसे मकरध्वज कहा गया।

पराशर संहिता में हनुमान जी के विवाहित होने का प्रमाण मिलता है की सुवर्चला नामक कन्या के साथ विवाह करना पड़ा था। सूर्य देव के पास शिक्षा ले लिया।

गुणों के भंडार श्री हनुमान जी...

अखंड ब्रह्मचर्य, अटल भगवत भक्ति, अपार सेवक, वीरता, धीरता, बल, पराक्रम, विद्या, साहस, बुद्धिमता विशेष में राजनीतिज्ञ, मानस शास्त्री, साहित्यकार, व्याकरणकार, तत्त्व ज्ञानी एवं बुद्धिमता वरिष्ठ ऐसे अनगिनत गुण के भंडार श्री हनुमानजी है।

ज्ञान और गुणों के भंडार कलियुग के अजर अमर देवता श्री हनुमान महाराज जी को कोटि-कोटि वंदन।

अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामी

- श्रीमती आर.गायत्री
मोबाइल - ९४९०८३७२८०

प्रस्तावना :- अत्यंत प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण तिरुमल श्री बालाजी मंदिर से घिरे हुए सात प्राचीन बालाजी मंदिरों में अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर भी एक है। यह मंदिर चित्तूर जिले में स्थित अप्पलायगुंटा नामक प्रांत में है। यह मंदिर तिरुपति से बीस किलो मीटर की दूरी पर तिरुचानूर से चेन्नै जानेवाले मार्ग में उपस्थित है। इस मंदिर के गर्भालय में श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामी के मूर्ति चतुर्भुज, शंक-चक्र धारण किए हुए कटिहस्त तथा अभयहस्त मुद्रा में प्रसन्न वदन से दर्शन देते हैं। साधारणतः सभी बालाजी मंदिरों में मूर्ति कटिहस्त तथा वरदहस्त रूप में दर्शन देते हैं। मगर अप्पलायगुंटा मंदिर एक मात्र ऐसा मंदिर है जो बालाजी की मूर्ति कटिहस्त तथा अभयहस्त रूप में दर्शन देते हैं, यही इस मंदिर की विशेषता है।

श्री प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामी मंदिर की गाथा और महिमा :- वैकुण्ठनाथ श्री महाविष्णु भक्तजन केलिए कलियुग में प्रत्यक्ष रूप से चित्तूर जिले तिरुमल प्रांत के शेषाचल पर स्वयंभू रूप में अवतरित हुए। आदिवराह क्षेत्र में श्री बालाजी श्री वेंकटेश्वरस्वामी के नाम से पूजाएँ स्वीकार कर रहे हैं। श्री श्रीनिवास स्वामी के विवाह पद्मावती देवी के साथ बडे धूम-धाम से हुआ। श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी तिरुमल पहाड जाने से पहले चित्तूर जिले के कई प्रांतों में बसने लगे। भक्तजनों की प्रार्थना के अनुरूप कुछ दिनों तक वहाँ ठहरें। श्री वेंकटेश्वर स्वामी विवाह के पश्चात् नारायणवणम् से होते हुए अप्पलायगुंटा पदारे। वहाँ भी कुछ दिनों तक निवास करने लगे। यह अप्पलायगुंटा प्रांत साक्षात श्री वेंकटेश्वर स्वामी निवासित पावन प्रदेश है। यहाँ की मूर्ति प्रसन्न रूप में दिखाई देते हुए भक्तों को आशीर्वाद देने के कारण यहाँ के स्वामी श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामी नाम से विख्यात हुए।

स्थलपुराण :- नारायणवणम् में आकाश राजा के पुत्रि पद्मावती से कल्याण होने के बाद श्री श्रीनिवास स्वामी तिरुमल में स्थित श्री वकुलमाता आश्रम जाते समय मार्ग में अप्पलायगुंटा में तपस्या करनेवाले श्री सिद्धेश्वर स्वामी की तप से प्रसन्न होकर उन के इच्छानुसार यहाँ अप्पलायगुंटा में ही प्रसन्न मीर्ति के रूप में निवास करने लगे। तत्पश्चात् अप्पलायगुंटा से निकलकर पैदल चलते

हुए तोंडवाडा में स्थित श्री अगस्त्येश्वर स्वामी को दर्शन करके उस प्रांत के समीप में हुए श्रीनिवासमंगापुरम्, श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी के प्रांत में छः महीने रहकर वहाँ से 'श्रीवारि मेट्टु मार्ग' से तिरुमल पहुँचे।

आलय इतिहास :- यह आलय निर्माण विजयनगर राजाओं के शासनकाल में हुआ था। इस मंदिर मुख द्वार दीवारों के शिलालेख पर सन् १५८५ में तत्कालीन शासक श्री वेंकटपतिरायल जी ने दान दिया था ज्ञात होता है। इस से यह धारणा जनता में प्रचलित हुई है कि इस मंदिर का निर्माण सन् १५८५ वर्ष से पूर्व ही हुआ था। लग-भग हजार वर्षों से भी अधिक ऐतिहासिक महत्व रखनेवाले कार्वेटिनगर राजाओं के शासनकाल से दौरान में भी इस मंदिर का बडा महत्व था। उन्होंने भी प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामी की बडी उपासना की है। कार्वेटिनगर राजाओं के शासन काल में तिरुमल, तिरुपति, तिरुचानूर मंदिरों में जो उत्सव, जुलूस, पूजा कार्यक्रम होते हैं वह सभी कार्यक्रम यहाँ अप्पलायगुंटा मंदिर में भी निर्वहण करने में कार्वेटिनगर राजा लोग मुख्य भूमिका निभाते थे। यह विषय तत्कालीन शिलालेखों से स्पष्ट होता है।

अप्पलय्या कहानी :- प्राचीन काल में यह प्रांत को अनुरुण (वेकर्ज सरोवर) सरोवर के नाम से पुकारा जाता था। इस प्रांत का नाम अप्पलायगुंटा कहलाने में भी एक कहानी प्रचलित है। इस प्रांत में अप्पलय्या नामक एक आदमी रहता था। अपने नाम के अनुसार (तेलुगु भाषा में अप्पु शब्द का अर्थ उधार या कर्ज) गाँव में सब लोगों से उधर लेता था। इसे जानकर एक आदमी ने दुराशा से अप्पलय्या पर अरोप लगाया कि ''इस ने मुझ से धन उधार में लिया है।'' लोगों ने भी इसे सच मानकर उस आदमी को धन लौटा देने की सूचना दी। अप्पलय्या ने लाख प्रयत्न करने पर भी लोगों ने उस की एक न सुनी। इस से नाराज होकर अप्पलय्या ने एक पत्थर पर लिखा कि ''मैंने इस आदमी से उधार नही लिया।'' ऐसा लिखकर उस पत्थर को पोखर में फेंक दिया। आश्चर्य! वह पत्थर पोखर में नहीं डूबा। पानी में पत्थर तैरने लगा। इस घटना से गाँव वाला अचरज में पड गये उस की बात मान ली। और अप्पलय्या की ईमानदारी की प्रशंसा करने लगे। तब से वह पोखर अनूरुण सरोवर नाम से और वह प्रांत अप्पलय्यगुंटा नाम से पुकारा जाने लगा। कालांतर में यही प्रांत अप्पलायगुंटा नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अप्पलायगुंटा में स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मूर्ति कटिहस्त तथा अभयहस्त से मंदस्मित वदनारविन्द होकर दर्शन देते हैं। इसी वजह से वहाँ की मूर्ति को प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामी के नाम से भक्तजन पुकारने लगे। इस मंदिर की दक्षिणी ओर ऊँचे पहाड हैं। इस मंदिर के चारों ओर हरियाली फैली हुई हैं। फल-फूलों से लदे हुए पेड नजर आते हैं। प्रकृति की गोद में स्थित यह मंदिर जनता का मन मोहता है।

यह मंदिर का प्रधान द्वार पार करते ही ध्वजस्तंभ है। इस के दर्शन मात्र से भक्तजनों के मन में भगवान के प्रति श्रद्धा और भक्तिभाव जाग उठते हैं। ध्वजस्तंभ के आगे गर्भालय में मूलविराट श्री प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामी के दिव्य मंगल रूप भक्तजन को सम्मोहित करता है। इस मंदिर में स्वामीजी के दाहिनी ओर पद्मावती देवी और बाई ओर श्री आंडाल देवी की मूर्तियाँ विराजित है। यह मंदिर

के आगे एक सरोवर, उस के आगे श्री हनुमान जी का मंदिर है।

सेवाएँ :- इस मंदिर में हर दिन सुप्रभात सेवा, तोमाल सेवा, अर्चना, बलि, सत्तुमोरा आदि सेवाएँ होती है। हर रविवार हनुमान जी को और हर सोमवार को श्री गरुडाल्वार को सुगंध द्रव्यों से दूध, पवित्रजल, नारियल पानी, शहद आदि से अभिषेकित किया जाता है। हर महीने में श्रवणा नक्षत्र के दिन श्री बालाजी की अर्जित कल्याणोत्सव संपन्न होता है। यहाँ स्वामीजी की प्रतिमा की लम्बाई करीब ७ फुट है।

इस के अलावा यह मंदिर में वैकुण्ठ एकादशी, वैकुण्ठ द्वादशी, रथसप्तमी, उगादि आस्थानं, पवित्रोत्सव, मकर संक्रांति, आणिवर आस्थानं, कार्तिक दीपोत्सव और अर्चना, निवेदन आदि सुचारू रूपसे होती है।

तिरुमल बालाजी के मंदिर के समान २०१६ वर्ष से यह मंदिर में भी हर महीने में प्रथम मंगलवार को अष्टदल पाद पद्माराधना सेवा भी की जा रही है। इस मंदिर का सब से बडी विशेषता है कि जो पति-पत्नि के बीच में उत्पन्न समस्याएँ, मानसिक संघर्ष और अपनी दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियाँ दूर होने के लिए यहाँ के श्री प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामीजी के दर्शन करते हैं। इस दम्पति श्री प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामीजी के दर्शन मात्र से उनकी सारी समस्याएँ दूर होती है। उन के जीवन में सुख शांति फैलती है।

उपसंहार :- दूर प्रांतों से भक्तजन यहाँ की स्वामीजी के दर्शन के लिए आते हैं। जो भी इस भगवान के चरण कमलों के दर्शन करेगा उन के सभी पाप मिट जाएगा। जो भी स्वामी के कटिहस्त के दर्शन करेगा, भगवान उसे संसार सागर से रक्षा करेगा। श्री स्वामीजी के मंदहास युक्त अभयहस्त के दर्शन करेगा। उसके सारे दुःख मिट जाते हैं। सारी संपत्तियाँ उन के अधीन होते हैं। वे सुखमय जीवन बिताते हैं।

भक्तजनों का मानना है कि अपनी-अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मंदिर में ९ या ११ बार प्रदक्षिण करने से अवश्य अपनी इच्छा पूर्ति होगी। अपनी मनमानी इच्छाएँ पूरी होने के बाद पुनः स्वामी के दर्शन करके भेंट चढाते हैं। कुछ भक्तजन प्रदक्षिण करके अपनी कृतज्ञता अदा करते हैं। इस तरह भक्तजनों की सभी इच्छाएँ संपूर्ण रूप से पूरा करते हुए श्री प्रसन्नवेंकटेश्वर स्वामीजी हमारे आस-पास अप्पलायगुंटा में विराजित होना हमारा सौभाग्य है। ऐसे परम पावन कृपासिंधु स्वामीजी की कृपा सब पर रहें।

सर्वोजनाः सुखिनो भवंतु!

श्रीरंगम रंगनाथस्वामी मंदिर

- डॉ.एच.एन.गौरी राव
९७४२५८२०००

भगवान हमेशा भक्तों की रक्षा के लिए विविध अवतार लिए हैं। ऐसे अवतारों में भगवान विष्णु का अवतार रंगनाथस्वामी एक है। १०८ वैष्णव मंदिरों में श्रीरंगम रंगनाथस्वामी के मंदिर का नाम सबसे पहले लिया जाता है। यह तमिलनाडु के तिरुचिनापल्ली से ८ या ९ किलोमीटर की दूरी पर कावेरी और कोलिदम नदियों के बीच द्वीप में स्थित है। श्रीरंगम रंगनाथस्वामी मंदिर सारी दुनिया में से क्रियाशील विशाल, सुंदर और अद्वितीय मंदिर है।

मंदिर के विविध नाम :

श्री रंगनाथस्वामी मंदिर को 'श्रीरंगम मंदिर', 'तिरुवरंगम तिरुपति', 'पेरियाकोइल', 'भूलोक वैकुण्ठ' आदि विविध नामों से भी जाना जाता है।

कावेरी तट पर स्थित तीन प्रसिद्ध रंगनाथस्वामी के मंदिर है -

१) आदिरंगा - श्रीरंगपटना, रंगनाथस्वामी मंदिर, कर्नाटका।

२) मध्यरंगा - शिवसमुद्रम, रंगनाथस्वामी मंदिर, कर्नाटका।

३) अंत्यरंगा - श्रीरंगम, रंगनाथस्वामी मंदिर, तमिलनाडु।

यह विशाल मंदिर पौराणिक, चारित्रिक, साहित्यिक और धार्मिक विशेषताओं के लिए बहुत प्रसिद्ध है। श्रीरंगम पधारनेवाले आगंतुक यहाँ की वास्तुकला की निपुणता तथा अद्भुत कलाकृतियों को देखकर अचंभित हो जाता है।

दार्शनिकता के अंतर्गत विशिष्टाद्वैतवाद का प्रवर्तन यही हुआ था। यह मंदिर रमणीय प्रकृति की गोद में निर्मित है। यह मंदिर अपने समय की संस्कृति को कदम-कदम पर प्रदर्शित करती है। इस क्षेत्र में कावेरी तट पर पितृ देवताओं के लिए पिंडप्रदान तथा तर्पण दिये जाते है, ताकि उनको सद्गति प्राप्त हो सके। नदी के तीर पर विजय गणपति तथा महालक्ष्मी के मंदिर है।

श्रीरंगम मंदिर के बारे में पौराणिक, ऐतिहासिक, चारित्रिक और साहित्यिक जिक्र अनेक मिलते हैं। आगे हम इस मंदिर की विशेषताओं, विशिष्टताओं, प्रचलित कथाओं और रंगनाथस्वामी के वैभव के बारे में जानने का प्रयास करेंगे।

गौतम ऋषि की कथा :

एक प्रचलित कथा के अनुसार वैदिक काल में गौतम ऋषि गोदावरी के तट पर आश्रम में रहते थे। एक दिन उन्होंने लोगों के कल्याणार्थ गोदावरी नदी को स्वर्ग से भूमि पर लाया। महर्षि के इस यश से ईर्ष्या करके अन्य ऋषियों ने उस पर गौ हत्या का अपवाद लगाकर उन्हें आश्रम से बहिष्कार करवाया। इस कृत्य से दुखी गौतम ऋषि ने आगे चलकर यहाँ कावेरी तट पर आकर भगवान विष्णु की तपस्या की। उसकी तप से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने अपनी शयनमुद्रा की मूर्ति को गौतम महर्षि को दिया। गौतम ऋषि ने इस मूर्ति की प्रतिष्ठापन इसी क्षेत्र में की। कालांतर में यह प्रदेश अरण्य बन गया था। बाद में शिकार करते हुए चोला राजा धर्मवर्मा का आगमन यहाँ होता है। राजा को यहाँ उद्भव मूर्ति मिलती है। इसी स्थान पर धर्मावर्मा द्वारा मंदिर का निर्माण आरंभ होता है।

विभीषण की कथा :

त्रेतायुग से संबंधित एक अन्य कथा इस प्रकार चलती है कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मदेव श्री महाविष्णु की पूजा करना चाहते थे। उसके इस संकल्प से प्रसन्न होकर विष्णु भगवान ने अपनी मूर्ति को ब्रह्माजी को समर्पण किया। विधाता श्रद्धा से पूजा करते थे। शायद यही सृष्टि में पहली मूर्ति होगी। कालांतर में वैवस्वत मनु का पुत्र इक्ष्वाकु ने तपस्या करके ब्रह्म से इस मूर्ति को प्राप्त किया। तब से इक्ष्वाकु राजाएं रंगनाथस्वामी की उपासना अयोध्या में करते आये। श्रीराम के समय तक ऐसा ही चलता आया। रावण पर विजय प्राप्त करके श्रीराम अयोध्या वापस आए। एक बार विभीषण का आगमन अयोध्या में होता है। श्रीराम के यहाँ रंगनाथस्वामी मूर्ति से आकर्षित होकर वे उसे लंका ले जाकर पूजा करना चाहते थे। उसकी इस इच्छा को श्रीराम नकार नहीं सके। उस मूर्ति को विभीषण को सौंपते हुए श्रीराम ने कहा कि ‘‘हे विभीषण! लंका जाने तक उसे धरती पर मत रखना। ऐसे करने से वह उसी धरती पर स्थापित हो जाएगी।’’ बड़ी खुशी से उस मूर्ति के साथ विभीषण लंका जा रहे थे। जब वे श्रीरंगम पहुँचे तब संध्या का समय था; वे संध्यावंदन करना चाहते थे। इससे चारों ओर देखने पर कोई भी नहीं दिखाई पड़ने से, वे मूर्ति को उसी स्थान पर रखकर सूर्य को अंजलि देने गये। फिर वापस आकर वे जितने भी प्रयत्न करने पर भी उठा नहीं सके। तब भगवान विष्णु ने प्रत्यक्ष होकर कहा कि ‘‘हे विभीषण! यह प्रदेश मुझे अत्यंत प्रिय लगा; इससे मैं इसी स्थान पर रहकर भक्तों की मनोकामना सिद्ध करना चाहता हूँ।’’ विभीषण के बहुत अनुरोध करने पर भगवान ने कहा कि ‘‘मैं लंका की ओर अर्थात् दक्षिण दिशा में मुख करके तुम को आशीर्वाद करूँगा।’’ तब से श्रीरंगम रंगनाथस्वामी का वास स्थान बन गया। विश्वास किया जाता है कि १२ वर्षों में एक बार भगवान की पूजा करने हेतु विभीषण श्रीरंगम पधारते है। आज भी हम दक्षिण मुखी भगवान को यहाँ देखते हैं, जो स्वयंभू है।

मंदिर का चारित्रिक आधार तथा इतिहास :

श्रीरंगम के सुंदर मंदिर के समान इसका चरित्र और इतिहास भी रोचक है। इस मंदिर का निर्माण १७, १८ सदी में हुआ है। इस मंदिर के शहर में करीब ८०० शिलालेख प्राप्त है, इनमें से ६४० मंदिर के दीवारों पर है। ये शिलालेख तमिल, संस्कृत, कन्नड, तेलुगु, मराठी तथा उड़िया भाषाओं में लिखित है। संगम युग के तमिल साहित्य ''शिलप्पादिकारम'' में तथा प्राचीन तमिल साहित्य 'तिविय प्रबंधं' में इस मंदिर के बारे में विवरण मिलते है।

चारित्रिक शिलालेखों के आधारों के अनुसार मंदिर की नींव तथा कुछ हद तक मंदिर का निर्माण चोला राजा धर्मावर्माकोलन तथा किलीविलवन ने किया था। चोला, पांड्या, होयसला, नायक और विजयनगर राजाओं ने अपने-अपने शासनकाल में इस मंदिर के निर्माण में योगदान दिया। मुसलमानों के आक्रमण के समय मंदिर का लूट तथा ध्वंस होने पर भी इसका फिर से राजाओं द्वारा पुनर्निर्माण किया गया। इस मंदिर के तथा पुजारियों के महत्व को जानने के बाद टिप्पू सुल्तान ने भी इस मंदिर के निर्माण में योगदान दिया।

१३ नंवबर, २०१७ को इस मंदिर को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण हेतु 'यूनेस्को एशिया प्रशांत पुरस्कार मेरिट, २०१७' भी मिला था।

मंदिर स्थापत्य :

इतना बड़ा मंदिर जो बहुत ही विस्तृत और विशाल है, सारी दुनिया में कहीं भी देखने को नहीं मिलता। इस भव्य मंदिर को देखने तथा भगवान रंगनाथ के आशीर्वाद को प्राप्त करने असंख्य श्रद्धालु हर वर्ष यहाँ पहुँचते है।

मनोहर प्रकृति के बीच कावेरी तट पर स्थित श्री रंगनाथ मंदिर इस मंदिर स्थापत्य तमिल शैली की है।

इस भव्य मंदिर का विस्तार १५६ एकड़ है और परिधि १०,७१० फीट है। इस मंदिर का गर्भगृह ७ प्राकारों से और २१ गोपुरों के मध्य स्थित है।

राजगोपुरम :

मंदिर का दक्षिण गोपुरम जो 'राजगोपुरम', 'अच्युत गोपुरम' भी कहलाता है; वह पूरे एशिया में सबसे ऊँचा है और २३९.५ फीट लंबा है। एक किंबदंती के अनुसार इस गोपुरम से लंका का तट देखा जा सकता है। १३ मंजिलों का यह गोपुरम वर्णमय तथा रम्य दिखाई पड़ता है और देखनेवालों को चुंबक की तरह अपनी ओर आकर्षित करता है इस गोपुरम की रचना विजयनगर सम्राट अच्युतराया ने की थी। इनकी मृत्यु के उपरांत ४०० वर्ष तक यह असंपूर्ण ही रहा। तदनंतर श्री वेदांत यतेंद्र महादेसिकन श्री अहोबिला मठ के ४४वें जियार द्वारा गोपुरम की रचना पूर्ण की गयी। इस मंदिर के गर्भगृह का गोपुरम स्वर्ण लेपित है। इसका आकार तमिल ओंकार की तरह है।

मंदिर की संरचना :

मंदिर के सात प्राकार सप्त लोकों का प्रतीक है। मंदिर के सात प्राकारों में बाहर का प्राकार सबसे ऊँचा है। बाहर के तीन प्राकार व्यापार तथा नगर वासियों के लिए है। प्रांगण में अभय आंजनेय स्वामी के शिला रूप के दर्शन किया जाता है। गरुड के नाम पर 'गरुड़ मंडपम' दिखाई पड़ता है। यहाँ गरुड़ की बृहद मूर्ति

२५ फीट है जो चौथे प्राकार में स्थित हैं। इस मंड़पम के बगल में 'सूर्य पुष्करिणी' और उसके सामने 'चंद्र पुष्करिणी' है। 'कीली मंडपम' सबसे अंदर पाया जाता है। 'रंग विलास मंडपम' सामुदायिक हालों में से एक है, जो यात्रियों के विश्राम के लिए निर्मित है। यहाँ रामायण और हिंदू पौराणिक कथाओं को दर्शाया गया है। मंदिर के एक ओर अन्ना भंडार, संग्रहालय तथा पुस्तकालय भी है। मंदिर के प्रांगण में ५० से अधिक मंदिर हैं। विष्णु के अवतार जैसे-चक्रध्वज, नरसिंह, राम, हयग्रीव तथा गोपाल कृष्ण आदि मंदिर के विभिन्न स्थानों में स्थित हैं। वेणुगोपाल मंदिर, जो सबसे अधिक मनमोहक है, मंदिर के चौथे प्राकार के दक्षिण-पश्चिम कोने में स्थित है। मंदिर के परिसर में सरस्वती, विष्वक्सेन, बालाजी और धन्वंतरी के मंदिर तथा विभिन्न वैष्णव विद्वानों और कवियों के मंदिर भी है। विश्वास किया जाता है कि मंदिर के अंदर भूगर्भ में विरजा नदी बहती है।

१००० स्तंभों का योजनाबद्ध कक्ष जो ग्रेनाइट से निर्मित रचना की तरह है, इस मंदिर का मुख्य आकर्षण है। स्तंभों में अद्भुत नक्शा दिखाई देती है। इसका निर्माण विजयनगर साम्राज्य काल में हुआ। 'शेष मंडपम' नायक शासन काल में निर्मित था। यहाँ की शानदार कलाकृतियाँ उस जमाने की कला निपुणता का दृष्टांत हैं। सबसे अंदर मध्य भाग में गोलाकार गर्भगृह है, जहाँ रंगनाथस्वामी विराजमान है। गर्भगृह के सामनेवाले सोने के स्तंभ 'तिरुमनैत्तून्' कहलाते हैं। रंगनाथस्वामी के गर्भगृह के पास ही रंगनायकी का मंदिर है। इस मंदिर की वास्तु कला को जितना भी वर्णन करो, कम ही पड़ता है।

रामानुजाचार्यजी का पार्थिव शरीर :

इस मंदिर की एक और विशिष्टता यह है कि यहाँ एक कोने में श्रीरामानुजाचार्य के पार्थिव शरीर को संरक्षित किया गया है, जो बैठकर उपदेश देने की मुद्रा में है। इस देह पर केवल चंदन, कपूर और केसर का लेप लगाया जाता है; इसके अलावा किसी अन्य रासायनिक पदार्थ का उपयोग नहीं किया जाता है। इस मिश्रण को दो साल में एक बार रामानुजाचार्यजी के पार्थिव शरीर पर लगाया जाता है। इस लेप के

कारण शरीर केसरिया रंग में परिवर्तित हो चुका है। अनेक वर्षों से उनकी भी अर्चना की जा रही है।

भगवान का स्वरूप :

गर्भगृह में सुवर्ण पीठ (जो विमानम कहलाता है) पर रंगनाथस्वामी की मूर्ति ५ फनियोंवाले शेषशय्या पर विश्रांत मुद्रा में विराजित हैं। विष्णु का सिर एक छोटे बेलनाकार तकिए पर टिका होता है। उसकी दाहिनी हथेली जो ऊपर की ओर होती है, उसके सिर के बगल में रहती है। भगवान रंगनाथजी के काले पत्थर का मनमोहक मूर्ति का दर्शन कर श्रद्धालु धन्य हो जाते हैं। भगवान के चरणों के समीप विनीत भाव से प्रार्थना करते हुए विभीषण जी की प्रतिमा है। यहाँ गर्भगृह में मूल शयन मूर्ति 'पेरिया पेरुमाल' तथा उत्सव मूर्ति 'नंबेरुमाल' कहलाते हैं। गर्भगृह में श्रीदेवी भूदेवी की उत्सव मूर्तियाँ है।

माता रंगनायकी :

श्रीरंगम में रंगनाथ की पत्नी रंगनायकी है जो महालक्ष्मी का अवतार है। सकल आभरणों से मंडित रंगनायकी अपने वैभव रूप को दर्शाती है। यहाँ लक्ष्मी का नाम 'श्रीरंग नाच्चियार' है। मंदिर में आने वाले भक्त पहले रंगनायकी का दर्शन करने के बाद ही रंगनाथस्वामी का दर्शन करते हैं। माता के कटाक्ष के बाद रंगनाथस्वामी से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। माता रंगनायकी अपने मंदिर में स्थिर रहती है। उत्सव के दौरान रंगनायकी रंगनाथ के साथ जुलूस में नहीं जाती है। रंगनाथ ही रंगनायकी की सन्निधि में आते हैं, वही उत्सव मनाया जाता है। रंगनाथस्वामी के साथ रहने पर 'पंगुनी उथीराम' के दौरान 'सेर्थी' के रूप में पूजी जाती है। माता की कृपा से विद्या, विजय, ऐश्वर्य, अभिवृद्धि आदि प्राप्त कर सकते हैं।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, देव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

श्री वेंकटेश सुप्रभात

स्तोत्र रचना - श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा स्वामीजी
व्याख्या - श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी
मोबाइल - ९३६४३२४८४४

मीनाकृते कमठ कोल नृसिंह वर्णिन्
स्वामिन् परश्वधतपोधन रामचन्द्र।
शेषांशराम यदुनन्दन कल्किरूप
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ।।२४।।

पदार्थ -

मीन आकृते - मीन(मत्स्य) के सुन्दर रूप धारण करने वाले,

कमठ - कछप(कछुवा) का सुन्दर रूप धारण करने वाले,

कोल - हे वराह,

नृसिंह - नरसिंह,

वर्णिन् - वामन ब्रह्मचारी,

परश्वध तपोधन - कुठार आयुध वाले परशुराममुने,

रामचन्द्र - हे रामचन्द्र,

शेषांशराम - आदिशेष के अंश वाले हे बलराम,

यदुनंदन - यादव कृष्ण,

कल्किरूप - कल्कि के रूप धारण करने वाले,

स्वामिन् - ऐसे अवतारों को लेकर स्वामी (नाथ) होने वाले,

श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

भावार्थ - दस अवतारों को लेकर, सज्ञनों के विरोधी असुर राक्षसों का संहार कर हमें अपनाये नाथ श्रीवेंकटनाथ आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - नीचे (पिछले) श्लोक में कल्याणगुणों का प्रस्ताव हुआ। उसके बल से याद आये अवतारों को इस श्लोक में वर्णन करते हैं। गुणपरिवाह (गुणों के बल से प्रकट होने वाले) होते हैं भगवान के अवतार। अर्थात् ज्ञान, शक्ति, दया, वात्सल्य आदि गुणों का आविष्कार (प्रगट) करने के लिए ही भगवान का अवतार होता है।

ना चासौ सिहश्च - नृसिंहः शरीर से मनुष्य के शीर्ष से सिंह के रूप का अवतार। वर्णी - ब्रह्मचारी वामन। ''वर्णिनो ब्रह्मचारिणः'' यह अमरकोश है! वर्णी-स्तुत्य (प्रशंसनीय)। सालग्रामजी के समान स्वाभाविक शुद्ध (पवित्र) ऐसा ब्रह्मचारियों की प्रशंसा करते हैं। परश्वधं-कुठार (कुल्हाड़ी)। ''परशुश्च परश्वथः'' यह

अमरकोश है। रामचन्द्रः - षोडश कलावाले चन्द्र जैसा सौशील्य, वीर्य आदि षोडश गुण वाले भगवान राम रामचन्द्र कहलाये हैं। ''दैवक्या जठरे गर्भं शेषांशं धाम मामकम्। तत्सन्निकृष्य रोहिण्या उदरे सन्निवेशय।।'' (श्री भागवत १०-२-८) मेरे तेजयुक्त आदिशेष नाम वाले देवकी के गर्भ को ले जाकर रोहिणी के उदर में रख दो। ऐसा (आगे) कृष्ण रूप धारण करने वाले भगवान योगमाया को आज्ञा देने से यह बात स्पष्ट है कि रोहिणी का पुत्र बलराम आदिशेष का अंश है। यदुकुल में जन्म लिये कृष्ण यादवों को आह्लादित करने से 'यदुनंदन' कहा गया है। कलियुग के अंत में भगवान श्वेत (सफेद) रंगवाले अश्व में (घोडा) सवार होकर पापियों को अपने हाथ से खड्ग (तलवार) से काट देगा-ऐसा पुराण का वचन है। कल्कः श्वेत अश्वः (सफेद घोड़ा) है। ऐसे अश्व वाला कल्की है।।२४।।

एलालवङ्ग घनसार सुगन्धि तीर्थं
दिव्यं वियत्सरिति हेमघटेषु पूर्णम्।
धृत्वाऽद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टाः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ।।२५।।

पदार्थ -

वैदिक शिखामणयः - वैदिकों में श्रेष्ठ,

वियत्सरिति - आकाशगंगा से,

हेमघटेषु - स्वर्ण घटों में,

पूर्ण - पूर्ण कर,

दिव्यतीर्थं - श्रेष्ठ तीर्थ को,

एलालवङ्ग घनसारसुगन्धि - इलायची, लौङ्ग, भीमसेनी कपूर इनको मिलाकर सुगन्धित कर,

धृत्वा - (शिरपर) धारण कर,

प्रहृष्टा - विशेष रूप से हृष्ट होकर,

तिष्ठन्ति - (यहाँ आकर) खड़े हुए हैं,

वेंकटपते तव सुप्रभातम् - हे वेंकटनायक, यह आपको सुप्रभात हो।

भावार्थ - वैदिक श्रेष्ठ (सज्जन) आकाशगंगा के तीर्थ को स्वर्णघडों में भरकर (उसमें) सुगन्धि द्रव्यों को मिलाकर शीर्ष पर धारण किये लाकर, आपके आराधन की प्रतीक्षा करते हैं। हे वेंकटनाथ आपका यह सुप्रभात है।

विशेषार्थ - श्री शैलपूर्ण स्वामी पापविनाशतीर्थ से घड़े में तीर्थ भरकर भगवान को समर्पण कर रहे थे। बाद में भगवान की आज्ञा से आकाशगंगा से तीर्थ लाने लग गये हैं। इसी अर्थ को बताने के लिये यहाँ ''वियत्सरिति'' कहा गया है। (इसका विवरण वेंकटाचल के इतिवृत्त को बताने वाले ग्रन्थ में (तिरुमलै ओलुगु) वर्णित है)। वैदिक शिखामणयः - वेदार्थ को जानकर उस प्रकार आचरण करने वालों में श्रेष्ठ। (श्री शैलपूर्ण स्वामी के वंशजों को (तोलप्पर-मित्रतात) यहाँ उल्लेख किया गया है। यह प्रत्यक्ष सिद्ध है कि ये लोग आज भी आकाशगंगा से तीर्थ लाना, वेदपारायण करना इन दोनों कैंकर्यों को करते हैं) इस स्तोत्र ग्रंथ के रचयिता श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा स्वामी भी स्वयं आचार्य की प्रेरणा से कुछ समय श्री वेंकटाद्रि में तीर्थ लाने का कैंकर्य करते थे। यह बात उनके चरित्र से (इतिहास) मालूम होता है। अतः इस वृत्तान्त को आदरपूर्वक कहते हैं। 'कैंकर्य' (इस) भावना से करने से कहा गया है कि ''प्रहृष्टाः'' ।।२५।।

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
सम्पूरयन्ति निनदैः ककुभो विहङ्गाः।
श्रीवैष्णवाः सततमर्थितमङ्गलास्ते
धामाश्रयन्ति तव वेंकट सुप्रभातम् ।।२६।।

पदार्थ -

भास्वान् - सूर्य,

उदेति - उदित होता है,

सरोरुहाणि - कमल फूल,

विकचानि (सन्ति) - खिलते हैं,

विहङ्गाः - पक्षी,

ककुभः - दिशाओं को,

निनदैः - (अपने) (कल-कल) नाद से,

सम्पूरयन्ति - भर देते हैं (गूंजित करते हैं),

श्रीवैष्णवाः - श्रीवैष्णव लोग,

सततं - हमेशा,

अर्थितमंगलाः - मंगलकामना (आपको) करते हुए,

ते धाम - आपके दिव्यालय को,

आश्रयन्ति - प्राप्त हुए,

वेंकट - हे वेंकटेश,

तव सुप्रभातम् - यह आपको सुप्रभात हो।

भावार्थ - सूर्योदय होता है, कमलफूल खिलते हैं, चिड़िया आदि पक्षी कल-कल नाद करते हैं, आपको मंगल हो ऐसा प्रार्थना करने वाले बड़े जीयर स्वामी आदि श्रीवैष्णव लोग आपके मंदिर के द्वार को प्राप्त हुए हैं। हे वेंकटेश आपको यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - भगवान को मंगलाशासन करने वाले यतिराज श्रीरामानुजाचार्य के स्थान (गद्दी) में अभिषिक्त बड़े जीयर स्वामी, छोटे जीयर स्वामी, एकांगी, श्रीशैल अनन्त पुरुष वंशज, अरैयर (दिव्यप्रबंध के गायक) आदि श्रीवैष्णव यहाँ कहे गये हैं।

भागवत, परमभागवत, एकान्ती, परमैकान्ती ऐसे कुछ अधिकारी हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति करने वाला भागवत है। उसके लिए प्रपत्ति करने वाला परमभागवत है। भगवान को ही (भक्ति या प्रपत्ति के बिना) उपाय मानने वाला एकान्ती है। भगवान को ही उपाय मानकर, ऐश्वर्यादि को न चाहकर, उनको ही चाहने वाला, अनन्य प्रयोजन (अन्य फलों की आशा न करनेवाला) परमैकान्ती है। यह बात चिन्तन करने योग्य है कि इस श्लोक में कहे गये अधिकारी, भगवान से किसी फल की कामना नहीं करते हुए, उनकी भलाई मात्र चाहने वाला (मंगलाशासन करनेवाला) पहले कहे चारों से श्रेष्ठ है।।२६।।

क्रमशः

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

१०८

श्रीमते रामानुजाय नमः

इसका खुलासा भाव यह हुआ कि साधन प्रपत्ति में इस चेतन को स्वतन्त्र कर्ता होना पड़ता है और जहाँ पर स्वतन्त्रता पूर्वक किसी भी साधन में प्रवृत्त होने के लिये शास्त्रों में आदेश है वहाँ फिर साधनकर्ता अधिकारी के पीछे अनेक प्रकार के विधि विधान का इतना अड़ंगा लगा है कि सब तरह से सम्हलकर करने पर भी काल कर्म गुण स्वभाव के आधीन इस चेतन के द्वारा साधन सिद्ध नहीं हो पाता है। किसी प्रकार जन्म-जन्मान्तरों में सिद्ध भी कर पावे तो उसके लिए फल भाग में धोखा है। प्रपत्ति शास्त्र का कहना है कि जो प्रधान कर्त्ता है वही फल का प्रधान भोक्ता भी बनता है इस कारण परमपद में भी साधन दशा की कर्तृत्वाहंकार की वासना फल दशा में भोक्तत्वाहंकार रूप से अधिकारी के साथ-साथ बनी ही रहती है। परमपद में भी उस अधिकारी को लीलाविभूति वाली सूक्ष्म वासना परमात्मा के परिपूर्ण अनुभवानन्द से, दिव्य कैंकर्य से चित्त हटाकर प्राकृत कामनाओं के तरफ उसके मन को झुका देती है। परमपद में पहुँचे हुए अधिकारियों के लिये श्रुतियों का कहना है कि -

''यदा अयं स्त्री लोक कामो भवति तदा
संकल्पादेवास्यस्त्रियः समुपतिष्ठन्ते।
यदा अयं पितृलोक कामाभवति तदा संकल्पा
देवास्य पितरः समुपतिष्ठन्ते।''

इसका भाव यह भया कि फल दशा में भी उस अधिकारी को स्त्रियों को देखने की कामना तथा पितरों को देखने को भावना उत्पन्न हो आया करती है। विरजा नहा लेने के बाद परमपद में निवास मिलने पर भी अनन्य भोग्य जो आत्मा का असली स्वरूप है, अधिकारी के लिये उसकी सिद्धि नहीं हो पाई। साधन दशा में तो अधिकारी अनन्य शरणत्व रूप, जो आत्मा का स्वरूप है उससे वंचित ही रहा। क्योंकि फल प्रपत्ति के स्वरूप को भलीभांति समझे हुए जो पूर्वाचार्य हैं प्रपत्ति शास्त्र से निर्णीत सिद्धान्त के अनुसार उनका तो यह कहना है कि -

''उपायः स्वप्राप्ते रुपनिशदधीतः सभगवान्''

इसका यह भाव भया कि भगवत् की प्राप्ति के लिए भगवान ही उपाय हैं। बस इसीका नाम फल-प्राप्ति हुआ। चाहे प्रपत्ति कहिए या शरणागति या भगवान की निर्हेतुक कृपा, एक ही बात है। विशेष शास्त्रों का कहना है कि भगवान की प्राप्ति में भगवान ही उपाय हैं चेतन के द्वारा किया हुआ इतरावलम्ब नहीं। न उपाय का स्वीकार ही उपाय है। किन्तु कृपा करके इन दोनों को बताने वाले और बताकर चेतन के द्वारा कराने वाले भगवान हीं उपाय हैं। जैसे -

''त्यागश्चनोपायः स्वीकारश्चनोपायः
किन्तु उभय कारयिता भगवान एव उपायः।''

इस सूक्ति का वही अर्थ है जो ऊपर कह चुके हैं। जो भगवत्प्राप्ति के लिए भगवान को उपाय न मानकर

अपने से की हुई शरणागति को उपाय मानते हैं ''उनको साधन प्रपत्तिवाले'' कहते हैं। प्रपत्ति का पूरा स्वरूप न समझने के कारण साधन प्रपत्तिवाले अधिकारी अपने से किया हुआ जो प्रपत्ति का स्वीकार है उसी को उपाय मान बैठते हैं। अपने बेसमझपने के कारण आत्मा के जो तीन आकार हैं उनसे वंचित रह जाते हैं। स्वयं कर्त्ता होने के कारण अनन्यार्ह शेषत्व उनका बिगड़ जाता है। भगवान को छोड़कर स्वंकृत शरणागति को उपाय मानने के कारण अनन्य शरणत्व जो दूसरा स्वरूप है वह भी नहीं सुधर पाता। स्वयं कर्त्ता होने के कारण परमपद में भी प्रधान भोक्ता उन्हीं को रहना पड़ता है। इससे उनमें वहाँ तक भी भोक्तत्वाभिमान रहने के कारण अनन्य भोग्यत्व रूप जो आत्मा का तीसरा स्वरूप है वह भी नहीं सुधर पाया। परमपद पहुँचने पर भी इसी कारण उनकी वासना नहीं जा पाती है इसीसे इस प्रसंग में यह कहा गया है कि फल प्रपत्ति वालों के लिए शरणागति करने में देश-काल प्रकारादि का कुछ भी नियम नहीं हैं। परन्तु साधन प्रपत्ति वालों के लिये तो देश-कालादि का नियम है ही। इससे जहाँ कही भी भगवान के शरणागत होने में देश-कालादि विधान का नियम आवे वहाँ साधन प्रपत्ति वालों के लिए ही समझना चाहिए।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओं! हम कह आये हैं वह अति सूक्ष्म है। जो कभी इसको सुने नहीं और भगवत्कृपा पात्र महात्माओं की सत्संगति किये नहीं और प्रपत्ति शास्त्र को देखे नहीं हैं, न प्रपत्ति शास्त्र जानने वाले सद्‌गुरुओं की गोष्ठी में कभी बैठे हैं और मैं बहुत समझदार हूँ इस बात के अभिमान में चूर हैं वे इस प्रसंग को सुनकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे। और

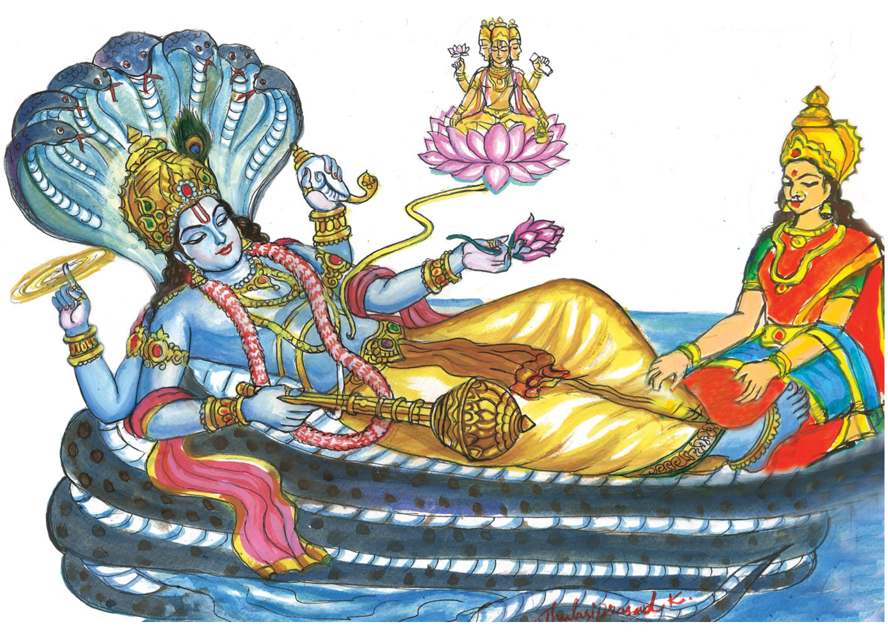

सद्‌गुरु के कृपापात्र जो सच्चे मुमुक्षु हैं उनका हृदय इस निर्णय को सुनकर खिल उठेगा। जैसे साधन स्वरूप कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, अचिद्वत्परतन्त्र स्वरूप को जानने वाले मुमुक्षुओं के लिए स्वरूप विरुद्ध मालूम पड़ता है, उसी प्रकार फल प्रपत्ति के स्वरूप को भली भाँति समझने वाले मुमुक्षु महात्माओं के लिए तो अहंकार गर्भित होने के कारण यह साधन प्रपत्ति भी अत्यन्त स्वरूप विरुद्ध ही प्रतीत होती है। क्योंकि उसमें किसी प्रकार आत्मा का स्वरूप ही नहीं रह जाता। साधन प्रपत्ति और फल प्रपत्ति के बाबत जिसको और ज्यादा समझने की इच्छा हो सो संस्कृत प्रपत्ति मीमांसा से समझ सकता है। उसका सारांश मैं कहा हूँ। इस विषय को अच्छी तरह से समझना चाहिए कि जिससे ध्यान में बना रहे। इसीलिए फिर भी संक्षेप में इसकी याद दिलाये देता हूँ। सावधानी से आप लोग श्रवण करिये। इस बात को लेकर यह बात चली है कि माया से तरकर जब तक यह जीव परमपद में नहीं पहुँचेगा तब तक सुखी नहीं होगा। बाद यह प्रसंग चला कि माया से तरकर परमपद जाने के लिए शास्त्रों में कितने प्रकार के उपाय वर्णन किये गये हैं और उनमें सब के लायक अचूक और सुलभ कौनसा

उपाय है। इसके बाद यह प्रसंग कहा गया कि माया से छूटकर परमपद में चले जाने के लिए भक्ति और प्रपत्ति ये दो प्रकार के प्रधान उपाय हैं इसी के बाद यह वर्णन हुआ कि साधन स्वरूप जो भक्तियोग है यह हद्द से ज्यादा कठिन है और प्रपत्ति सबके लायक अत्यन्त सुलभ उपाय है। यह प्रसंग कहके भगवान के श्रीमुख वचन के द्वारा यह निर्णय चला कि इस दुरत्यय माया से पार होने के लिए भगवान की प्रपत्ति के याने शरणागति के सिवा कोई भी दूसरा सीधा और अचूक उपाय नहीं है। बाद यह कहा गया कि भगवान की शरणागति में जीव मात्र का अधिकार है। इससे भगवान की शरणागति होने में किसी भी देश-काल प्रकार आदि का नियम नहीं है। कोई अधिकारी कहीं भी चाहे जब भगवान की शरणागति कर सकता है। इसी प्रसंग में यह बात आयी कि एक साधन प्रपत्ति दूसरी फल प्रपत्ति। इस तरह दो प्रकार के प्रपत्ति में भी भेद है। जो लोग भगवान को या भगवान की निर्हेतुक कृपा को उपाय न मानकर अपने से करी हुई शरणागति को माया बन्धन से छूटने के लिए उपाय मानते हैं वे साधन प्रपत्ति वाले अधिकारी कहे जाते हैं। और जो अन्य किसी उपाय को न लेकर माया से छूटकर परमपद में जाकर श्री भगवान की नित्य सेवा प्राप्ति के लिए सिर्फ एक भगवान को ही उपाय मानते हैं उनको फल प्रपत्ति वाले अधिकारी कहते हैं। उपनिषदों में कहा है कि भगवान का श्रीचरण ही हमारा उपाय है भगवान की निर्हेतुक कृपा ही हमें सहारा है इत्यादि सभी बातों का एक ही अर्थ होता है। इन शब्दों का जो प्रयोग करते हैं वे ही फल प्रपत्ति वाले अधिकारी कहे जाते हैं। साधन प्रपत्ति में प्रधान कर्ता और भोक्ता शास्त्रों के द्वारा वह अधिकारी ही माना जाता है। इसी कारण उसके पीछे अनेक प्रकार के विधि विधान के नियम लगाये गये हैं। फल भाग में भी उसके लिए भेद बताया गया है जो कि पहले हम कह चुके हैं।

क्रमशः

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

(गतांक से)

मंगलाशासन पाशुरम्

तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन. सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - ९४४३३२२२०२

आदिदेव भगवान

सोदियागि एल्ला उलगुम तोळुम्
आदिमूर्ति एन्ड्राल् अळवु आगुमो
वेदियर मुळु वेदत् तमुदत्तै
तीदिल सीर् तिरुवेंगडत्तानैये (२९२३)

कठिन शब्दार्थ - तोळुम् - वन्दना करना, वेदियर - वेद पंडित, तीदिल - दोष रहित

भावार्थ - यह तो सत्य है कि भगवान विष्णु की कीर्ति तो असीमित है। उनमें सारे गुण विध्यमान हैं। इसलिए उनको हम गुणों के सागर भी कहते हैं। वे तो हडे समदर्शब प्रभु कहे जाते हैं। इसलिए वे अपने भक्तों के प्रति जो ऊँच हो या नीच, धनी हो या गरीब रंक हो या राजा सब को समान दृष्टि से देखते हैं। ऐसे उत्तम पुरुषोत्तम की महिमा को वेद भी विशेष रूप से गाते हैं। भक्त कवि नम्माळवार सारे संसार के श्रेष्ठ एवं कीर्तिवान भगवान विष्णु के सामने अपने को नीच समझते हैं। उनका विचार है कि भगवान विष्णु की महिमा इतना पवित्र, ऊँचा और श्रेष्ठ है। मैं केवल उनकी कीर्ति को गाने काम-काम करने वासा एक नीच हूँ। उनकी कीर्ति को गाने वाला मैं इतना नीच हूँ और वे तो अमृत बराबर आदिदेव हैं। वे गाते हैं, ''भगवान विष्णु वेदों में बताये जाने वाले अमृत बराबर अत्यधिक मधुर हैं। ऐसे श्रेष्ठ भगवान पवित्र तिरुवेंकट पर्वत पर आकर विराजित हैं। वे उत्तम गुणों से युक्त हैं। महान ज्योति रूपी उनको आदिदेव मानकर सारे संसार पूजन

करते हैं। यह इस नीच का कथन है। क्या मेरे ऐसे कथन से उनकी कीर्ति बढेगी?''

मतलब यह है कि सारे गुणों से युक्त भगवान विष्णु पवित्र तिरुवेंकट पर्वत पर आकर विराजित हैं। अपने उत्तम गुण और कार्य से उनकी कीर्ति असीमित है। यहाँ तक कि जितना भी नीच हो उनकी महिमा को गाने वाले पर वे अपनी दया दिखाते हैं। उनके ऐसे कार्य से उनकी महिमा तो और बढती है न कि हमारे कीर्ति गायन से।

सेवा का सरल उपाय

वेम् कडंगळ मेय् मेल विनै मुट्रवुम्

तांगळ तंगळुक्कु नल्लनवे सेय्वार

वेंगडत्तु उरैवार्कु नम एन्नल्

आम कडमै अदु सुमन्दारकट्के (२९२४)

कठिन शब्दार्थ - वेम - जलने वाला, कडंगल - कर्म फल, मुट्रवुम - बिलकुल, नम - नमस्कार, कडमै - कर्तव्य

भावार्थ - हम जानते हैं कि जीवन में उन्नति और अवनति का मूल कारण कर्मफल मात्र है। इसलिए तो कहा जाता है कि जो बोया जाता है, वही काटा जाता है। यदि हम मनसा, वाचा, कर्मणा उत्तम कार्य को करंगे, तो उसका फल भी उत्तम ही होगा। यदि ऐसा न करें, तो उसका नतीजा नकारात्मक ही होगा। परंतु आळ्वारों का विचार है कि यदि भगवान विष्णु का नाम स्मरण करें, तो अब तक किये बुरे कार्य का फल और होने वाले बुरे फल आदि भी जल जाएँगे। क्योंकि भगवान के नाम स्मरण का उतना महत्व है। इसलिए हमें अपने जीवन में हर दिन भगवान का नाम स्मरण करें, तो पाप के सागर को बडी सरलता से पार कर सकते हैं।

भक्त कवि नम्माळ्वार अपनी कठोर भक्ति की साधना से हमें समझाते हैं कि कर्मफल की बाधाओं से बचकर भगवान की सेवा करने का सरल उपाय क्या है। कवि सोचते हैं कि गुण और कार्य से श्रेष्ठ भगवान विष्णु को नमः कहने से हमें बडा लाभ मिलता है।

वे गाते हैं, ''तिरुवेंकट पर्वत पर विराजित भगवान विष्णु को नमः कहना हमारा बडा कर्तव्य है। जो इस कर्तव्य को करते हैं उनको भगवान की सेवा में बाधा करने वाले कर्म फल और अपनी अज्ञानता से आने वाले कर्मफल आदि पूर्ण रूप से जल जाएँगे। यह कथन सत्य है। भगवान को नमः कहने से बाधायें अपने आप दूर हो जाएँगी और वे अपनी इच्छानुसार भगवान की सेवा को बडी स्वतंत्र से कर सकते हैं।''

मतलब यह है कि कर्मफल से होने वाली बाधाओं को पार करने और अज्ञानता से होने वाली बुराई को दूर करने का सरल उपाय भगवान विष्णु को नमः कहना मात्र है। यह कार्य तो कठिन या असाध्य नहीं है। हम सब इस सरल उपाय को अपने जीवन में पालन करके भगवान विष्णु की दया को प्राप्त करेंगे।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

पेदैयर् वेदप्पेरु ळिदेन्नुन्नि, पिरमन् नन्नेन्नु
ओदि मत्तेल्ला वुयिरु मःदेन्नु, उयिर्हल् मेय्विट्टु
आदिप्परनो डोन्नामेन्नु शोल्लु मव्वल्ललेल्लाम्
वादिल् वेन्नान्, एम्मिरामानुजन् मेय्म्मदि क्कडले ॥५८॥

‘ब्रह्मैकमेव सत्यम्, अवशिष्टास्सर्वेऽप्यात्मानस्तदभिन्ना एव; देहवियोगादूर्ध्व परमपुरुषेणैक्यप्राप्तिरेव मोक्षः; एतदेव सकलवेदतात्पर्यसर्वस्वम्’ इति प्रलपतां जडात्मनां दुर्वादानखिलान् वादाहवेषु व्युदस्तवान् यथार्थज्ञाननिधिरस्मदाचार्यो भगवान् रामानुजः।।

कितने अविवेकी जन यों कहते थे कि, ‘‘ब्रह्म एक ही सत्य है; दूसरे सभी जीव उससे अभिन्न हैं, और शरीर छूटने के बाद ब्रह्म के साथ उनका ऐक्य पाना ही मोक्ष है; यही सकल वेदों का तात्पर्य है।’’ यथार्थज्ञाननिधि हमारे आचार्य श्रीरामानुजस्वामीजी ने इन सभी कोलाहलों को वाद में जीत लिया।

‘‘ब्रह्म एक ही सत्य है; दूसरे सभी जीव उससे अभिन्न हैं, और शरीर छूटने के बाद ब्रह्म के साथ उनका ऐक्य पाना ही मोक्ष है; यही सकल वेदों का तात्पर्य है।’’

क्रमशः

तिरुमल मंदिर में स्थित हनुमान

श्री गोविंदराजस्वामीजी के ब्रह्मोत्सवों की दृश्यमालिका
(२०२१, मई १८ से २६ तक)

श्री पद्मावतीश्रीनिवास के परिणयमहोत्सव की दृश्यमालिका
(२०२१, मई २० से २२ तक)

श्री पद्मावती देवी जी का वसंतोत्सवों की दृश्यमालिका
(२०२१, मई २४ से २७ तक)

श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का वसंतोत्सवों की दृश्यमालिका
(२०२१, मई २१ से ३१ तक)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

अक्षयतृतीया(१४-०५-२०२१) के दिन तिरुपति में स्थित श्री वेंकटेश्वर वेदविश्वविद्यालय में शास्त्रोक्त के रूप में आयोजित 'श्रीलक्ष्मीनारायण पूजा' महोत्सव के दृश्य।

दि. २५-०५-२०२१ को तिरुमल वसंतमंडप में शास्त्रोक्त के रूप में आयोजित श्रीभीषण नृसिंहपूजा कार्यक्रम में धर्मपत्नी सहित भागलेते हुए ति.ति.दे. अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी।

हाल ही में तिरुमल वेदविज्ञान पीठ में संपन्न पूर्वाषाढ नक्षत्रेष्टि याग में भागलेते हुए ति.ति.दे. अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के सदस्य श्री शिवकुमार और अन्य अधिकारिगण।

सनातन साहित्य में स्त्री

- डॉ.एस.पी.वरलक्ष्मी, मोबाइल - ८६४४२२८०८५

विश्व में स्त्री का स्थान समुन्नत है। भारत में ही जन्म भूमी को प्रणाम करते हुए भारत माता कहना हमारा संस्कार सूचित करता है। यह प्रथा सिर्फ हमारे देश में ही है। स्वतंत्रता संग्राम में मातृभूमी - वंदेमातरम लगाते हुए लोगों में स्वतंत्रता के प्रति प्रेम स्वातंत्रता स्पूर्ती को जगाये। हमारे देश में ही सिर्फ स्त्रियों को 'माता' कहने का संस्कार है। अगर अपरिचित महिला आगे रही उससे बोलने की जरूरत है तो उसे - हे माँ - संबोधन करने का उत्तम गुण इस मिट्टी में जन्मित हर व्यक्ति का सहज लक्षण है।

गायत्री माँ वेदों की अधिष्टान देवी हैं। यह हमारे लिए गर्व कारण है। केवल यही नहीं इस देश के हर अणु में महिला शक्ति प्रकट होती है। गंगा-गोदावरी-नर्मदा-सरस्वती-यमुना इस प्रकार हर एक नदी को स्त्री नाम रहता है। कारण यह है कि - मानव को अत्यंत प्राणाधार पानी है। बिना पानी के जीवन नहीं है। स्त्री के बिना जीवन नहीं। इसीलिए पानी एवं स्त्री के लिए समान प्रधान स्थान दिया गया हैं। यह अर्वाचीन वाणी है। इन दोनों के बिना मानव का जीवन नहीं चलता। जीवन में परिपूर्णता नहीं पाता।

इसीलिए सभी नदियों को स्त्री मूर्ति के नामों से पुकारना हमारे देश में एक (प्रथा) संप्रदाय के रूप में रहा है। इतना ही नहीं गंगा माई-कृष्णम्म माई कहते हुए नदियों को माता के रूप में भावना करके पुकारने का दृश्य हमारे देश में ही है। गाय को भी गोमाता कहकर गौरव भावना से पुकार कर माँ के रूप में पूजा करना, नीम के पेड को लक्ष्मी देवी मानकर अर्चना करना इसी देश में हो रहा है। पानी-आग-सब में माता का दर्शन करने की समुन्नत जाति हमारी भारतीयता है।

वेदों में स्त्री की प्रशंशा :-

भारतीय संस्कृति के आधार 'वेद' स्त्री केलिए अत्यंत प्रधानता दिये हैं। ऋग्वेद-यजुर्वेद-अथर्वण वेदों में कई मंत्र स्त्री की उन्नति की प्रशंशा करते हुए महिलाओं पर गौरव रखने की जिम्मेदारी पुरुषों को दिया गया है। पति को सती के रूप में दासी की भांति सेवायें करना स्त्री धर्म है। ऐसी भावना को वे त्याग देना है यह वेदवाणी है। अथर्वण वेद की बात है कि घर की मालिक-बच्चों को प्रथम गुरु है। अत: जरूरत संदर्भों में पुरुषों के समान शिक्षा पाना है। पढाई पूरा होने के बाद ही विवाह का निर्णय लेना चाहिये। वेदों में कई उदाहरण हैं।

१) स्त्रियाँ धीरज से रहना चाहिये।

२) महिलायें अच्छी कीर्ति पाना है।

३) महिलायें उत्तम पांडित्य कमाना है।

४) स्त्री सब को ज्ञानवान तैयार करना है।

५) नारी हमेशा संपत्ति में सुख से रहना है।

६) स्त्री हमेशा अकलमंदी-ज्ञानवान होना है।

७) शासन संबंधी सभायें में भाग अधिवेशन लेना है।

८) देश की हुकूमत, सामाजिक संस्करण, सरकारी कामकलापों में महिलाओं को नेतृत्व देना है।

९) स्त्रियों को सभाओं में भाषण देना चाहिये।

१०) पैतृक आर्जन में बेटे के साथ बेटी को भी समान विरासत है।

११) स्त्री को परिवार और समाज केलिए रक्षक के रूप में रहना चाहिए।

१२) स्त्री संपत्ति एवं भोजन देते हुए घर की भलाई के लिए संसिद्ध होना है।

१३) स्त्रीयाँ युद्ध में भाग लेकर अपनी शक्ति को साबित करना चाहिये।

१४) पुरुषों के समान स्त्रियों को भी मंत्र प्रदान करना चाहिये। मंत्रों को समझने की शक्ति स्त्री को भी है।

मंत्र भाग में प्रचलित कई मंत्रों को गार्गी-लोपामुद्रा स्त्री मूर्ति द्रष्टा हैं। इसी प्रकार वेदमाता गायत्री-चंडी-दुर्गा- काली-सरस्वती आदि स्त्री मूर्तियों की संबंधित कई मंत्र हैं।

हे वधू! तुम्हें सभी प्रकार के विज्ञान मिल जाय। वेदज्ञान पाने के पश्चात ही तुम जीवन केलिए संबंधित निर्णय ले लो। तुम कीर्ति पाकर तुम्हारे पति एवं परिवार को शुभ-प्राप्ति करो। तुम्हारी होशियारी एवं ज्ञान से परिवार को अभिवृद्धि के पथ में चलाओं। अथर्वण वेद। (१४-१-६४)

हर एक स्त्री को शिक्षा पाना अनिवार्य है। उसके बाद ही विवाह करना चाहिए।

यज्ञ-यागादि क्रतुओं में भी पत्नी को अग्रस्थान वेदों ने प्रदान किया है। कोई भी कार्य करने केलिए तत्संबंधित अग्नि प्रतिष्टापन पत्नी ही करती है। उसके बाद ही पति यज्ञ का शुरुआत करता है।

यज्ञ करने की योग्यता को देनेवाली पत्नी ही है। वैवाहिक मंत्रों में भी वधु केलिए अग्रस्थान है। विवाह में करनेवाले यज्ञ में वर वधु से कहता है कि "तुम हमारे घर को अधिपति के रूप में आना चाहिये। केवल आना ही नहीं परिवार को अपने निर्देशन में चलाना चाहिये। हमारे घर में पुण्यकार्य करना है। पारिवारिक विषयों में प्रेरणा देकर सब को खुश करना है।" यह एक विनती है।

कन्यादान करते समय पिता अपनी बेटी को लक्ष्मी स्वरूप मानकर भावना करके वर के हाथ देता है। अपनी घर की लक्ष्मी है न! इसीलिये वैवाहिक मंच पर बिना चलाये, धान्य से भरकर बांस के बने टोकरी में बिठाकर लाते हैं। विवाह पूरा होने के बाद भी पती को बिना चलाये रथ या कोई वाहन में वधु को वर के घर भेजते हैं। विवाह प्रक्रिया में वर ही वधु को अपनी पत्नी के रूप में रहकर घर आने का आह्वान देकर ले जाता है। लेकिन किसी भी मंत्र में पुरुषाधिक्यता दिखाई नहीं पडती।

प्रथम कतार में स्त्री (वधू)

प्राचीन काल से हमारे आचार संप्रदायों में स्त्री का ही अग्रस्थान है। यही भारतीय संस्कृति है। पति-पत्नी को बुलाने के अवसर पर प्रथमतः पत्नी का नाम ही है। देवताओं में भी यह प्रथा है। उदा :- लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम, गौरी-शंकर, पार्वती-परमेश्वर, छाया-उषा-सूर्यनारायण, वल्ली-देवसेना-सुब्रहमण्येश्वर, अरुंधती-वशिष्ट आदि।

सभी पुराणों में वेदों के साथ स्त्री को शक्ति स्वरूप में वर्णन किये हैं। शाक्तेय पुराण त्रिमूर्तियों से बढकर जगज्ञनी-परदेवता के रूप में उन्नत पद में महिला को खडा किया है। वेदों में यज्ञों में भी स्त्री को अग्र स्थान दिया गया है। यज्ञों में मालिक की पत्नी को ही अग्नि प्रतिष्ठा करने के बाद ही कार्यक्रम चालू होता है।

पूर्णाहुति कार्यक्रम तक मालकिन को रहना अनिवार्य है। वैदिक शास्त्र नियमों में आज भी दंपति को नये वस्त्र समर्पण में पहले पत्नी को हल्दी-कुंकुम देने के बाद ही पती को वस्त्र देते हैं।

आदि मानव मनु ने धन की सावधानी और खर्च के विषय में स्त्री को प्रथमाधिकार दिया है। ग्राम देवता-पोलेरम्मा-नांचारम्मा-तिरुपतम्मा-बतुकम्मा सैकडों है। गाँवों में, घरों में शुभ कार्यों में प्रथम पूजा ग्रामदेवता को ही है। वर्षाभाव के संदर्भ में भी ग्राम देवता प्रधान है।

साहित्याकाश में अर्थभाग नारी

जनक महाराज के दरबार में गार्गी-मैत्रेयी नारीमणी पुरुषों के समान वेद शास्त्र चर्चा में शामिल हो रही थीं। कभी-कभी पुरुषों से भी साहिती सृष्टिकर्ती कई महिलाये हैं। तिक्कना की पत्नी चानम्मा-उसकी माँ पोलम्मा लोकोक्तियाँ कही थीं। प्रथम तेलुगु कवइत्री ताल्लपाका तिम्मक्का, तिरुमलांबा, लीलावती, तरिगोंडा वेंगमाम्बा, कृष्णाजम्मा, बंडारु अच्चमांबा कई मातृमूर्तियों ने अपने अनुपम रचना

शक्ति से तेलुगु साहित्य लोक को सुसंपन्न किये। हजारों सालों के पहले ही महिलाशक्ति विकसित थी।

रघुनाथ-नायक की दरबारी कवइत्री मधुरवाणी प्राकृत आंध्र भाषा में रचनायें करके स्वर्णाभिषेक पायी। विजय राघव नायक के दरबार में चंद्ररेखा रंगाजम्मा प्रसिद्ध हैं। दक्षिणांध्र-कवइत्रियों में 'मद्दुपकनि', 'राधिका सांत्वनम' रसाविष्करण में मशहूर है। मोल्लरामायण विशिष्ट काव्य है। कई महिलायें अपनी प्रतिभा से अखंड यशस्वी बनीं। कई युगों से महिला का गौरव स्थान हमारी संस्कृति विरासत को परिरक्षण करने की जिम्मेदारी हम सब अपनायेंगी सनातन भारतीय साहित्य में स्त्री केलिए समुन्नत पद दिया है। इसीलिए कहा गया है कि...

''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः।''

जहाँ स्त्रीयाँ पूजा पाती हैं वहाँ देवतायें भी स्थिर रहती हैं। यह बडे लोगों की वाणी है।

(गतांक से)

अनुक्रम - III

श्रीमद्भगवद्गीता

तेलुगु मूल -
आचार्य कुप्पा विश्वनाथ शर्मा

हिन्दी अनुवाद - श्री बी.राजीव रत्न
मोबाइल - ९४४०९२६८३०

कई सद्गुण विद्यमान हैं। हम भी दान करते हैं, अच्छे कर्म करते हैं। अच्छे कर्मों के साथ एक, दो रूपये दान भी देते हैं। दान करना एक अच्छा कार्य है। किन्तु उस समय हमारे मन में क्या चल रहा है उस पर भी विचार कर लेना चाहिए। ''मैं दे रहा हूँ वह ले रहा है।'' मुख पर मायूसी दंभ मेरा सब कुछ जा रहा है। ऐसे जैसे कि हमने उसका सारा जीवन संवार दिया हो ऐसे सोच रूपया फेंकते है। दो गुण मिले होते हैं। अच्छे और बुरे गुण मिले होते हैं। परोपकार किया है। करने के पश्चात क्या करते हैं? साधारणतया उसे गाली देते हैं। परोपकार करते उसे गाली देते हैं। परोपकार करना ही क्यों गाली देना क्यों? ये प्रश्न उत्पन्न नहीं होते। क्योंकि नीचे से दानव गुण भी आता है। इस तरह अनेक सद्गुण और दुर्गुण आपस में मिल जाते है कि उन्हें भिन्न नहीं किया जा सकता। वे आपस में युद्ध कर अंत में दुर्गुण विजयी होने का दिन भी आता है। दुर्गुण विजयी हो तब हम दानव में परिणत होंगे। पुनः अगले जन्म में या उसके आगे जन्म में दानव ही जन्म लेंगे ऐसा नहीं है।

हम दानव जन्म ले चुके होते हैं। ऐसे संदर्भ न आयें। मानव सतर्क रहें। देवतागण सद्गुणों को बढ़ा ले। उनमें लेश मात्र भी दुर्गुण हो, तो वे हमें नहीं चाहिए। दानवों के दुर्गुण तो चाहिए ही नहीं। मानव में सद्गुण पर्याप्त बढ़ने चाहिए। इस स्थान से भी ऊपर जायें। देव स्थान से अधिक ऊपर स्थान है।

उससे भी ऊँचा स्थान साक्षात अखिलाण्ड कोटि ब्रह्माण्ड नायक के चरण कमलों को पहुँचे। परमात्मा को जानने का उद्देश्य यह ब्रह्म का उपदेश है ऐसा हमें स्पष्ट पता चल रहा है। इसी स्पूर्ति से श्रीकृष्ण परमात्मा ने भगवद्गीतामृत में हमें उपदेश दिया है। इस तरह हमें मान लेना चाहिए। अर्जुन यह एक कार्य मात्र ही था। अर्जुन के सारे गुण हम में विद्यामान हैं। अर्जुन में कौन से गुण थे। अर्जुन ने क्या सोचा इन विषयों को हम विस्तार से इस अध्याय में जानेंगे। हम भी उस संदर्भ में वैसे ही सोचते हैं ऐसा सोचकर हम सभी के लिए उपयोगी पूर्व से अंत तक प्राप्त होने के लिए उपदेश दिया है। ऐसा उपदेश हम केवल श्रीकृष्ण परमात्मा ने अर्जुन को दिया है। श्रीकृष्ण परमात्मा हमारे अर्चावतारमूर्ती जैसे श्री वेंकटेश्वरस्वामी हमें ही देख रहे हैं। ऐसी भावना से यदि हम सुनेंगे, तो

ऐसी हमारी भावना हो तो उस अर्थ को अनुसंधान करले तो श्रीकृष्ण परमात्मा श्रीमद्भगवद्गीतामृत में दिये उपदेश का पूर्ण फल मिलेगा। हमें सत्फल प्राप्त होगा। यह प्राथमिक विषय है। इस भावना से यदि हम गीतामृत को समझेंगे तब भगवद्गीतामृत में कल के दिन हम ने जाना धृतराष्ट्र संजय से युद्धभूमि में किसने क्या किया किस प्रकार के विचार विमर्श हुए यह सारी बातें जानना चाहा। उसी के उत्तर में संजय ने इस प्रकार कहा -

''दृष्ट्वातु पाण्डवानीकम व्यूढम् दुर्योधनस्तथा
आयार्दमुपसगम्य राजा वचनमब्रबीत।''

ऐसा संजय ने कहा। वहाँ सारी सेना खड़ी है। वहाँ पाण्डव भी हैं दुर्योधन आपके पुत्र द्रोणाचार्य के निकट पहुँचकर वार्तालाप कर रहें हैं ऐसा कहा। उन्होंने क्या पूछा? इन्होंने क्या कहा एक बार देखे। उन्होंने क्या पूछा-

''धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।''

पाण्डव मेरे अपने हैं ये इन सब ने मिलकर क्या किया? ऐसा उन्होंने पूछा। इन्होंने दुर्योधन क्या किया कह रहे हैं। सभी मिलकर युद्ध कर रहे है ऐसे कह सकते यह भी मिलकर आपस में चर्चा कर रहें कम से कम ऐसे कहना था। दुर्योधन के बारे में पहले बता रहे? यहाँ पर हम संजय के समाचार बताने की निपुणता को समझे। संजय राजसेवक हैं। सावधानी से राजसेवक की भावनाओं को समझा। राजा का अभिप्राय उन्होंने ''धर्मक्षेत्र'' कहा था ना। वह धर्म को बढावा देने का क्षेत्र है। मानव साधारण ढंग से सोचना अलग है। धर्मक्षेत्र में जाकर सोचना अलग है। हम भी कुछ क्षेत्रों को जाते हैं तो हमने अच्छे विचारों की अनुभूति होने लगती हैं। साथ ही किसी अन्य क्षेत्र को जाये था यहीं कुछ दिन और रह कर अंगप्रदक्षिणा करें या कोई और रोक करें एसी भावनाएँ उत्पन्न होती रहती है। इस संदर्भ में ये जो पाण्डव है वे तो धर्म के पागल हैं। वे कुछ भी कहे युद्ध नहीं चाहते थे। हिंसा नहीं चाहते थे सब कुछ हम त्याग देंगे। आपका राज्य आप ही ले लीजिए ऐसा मेरे पुत्र से कहकर वे चले गए क्या? नहीं तो मेरा पुत्र ही उस धर्मक्षेत्र में पहुँच कर परिवर्तित हो यह युद्ध नहीं चाहिए। उनका राज उन्हें लौटाने का मन बना कर युद्ध स्थगित किया। वह नहीं आएगा इस बात का भरोसा है किन्तु लौट कर आजाएगा छोटा सा भय यह भी है। इन दोनों में किसने क्या किया पाण्डव युद्ध छोड़कर चले गये? नहीं तो मेरे पुत्र युद्ध रोक कर उनका राज्य उन्हें लौटा दिया? यह उनके प्रश्न का तात्पर्य था। तात्पर्य में ही धर्मक्षेत्र विद्मान होता है बहुत ही होशियार है वह अच्छा सेवक। सेवक को राजा क्या कहना चाह रहे है उनका अभिप्राय क्या है पता होना चाहिए। पता होने पर ही सेवक धर्म सही हो सकता है। शासन व्यवस्था भी ठीक चलती है। दूसरा उत्तर उन्होंने ऐसे आरम्भ किया आप घबराइये मत आप के पुत्र ने युद्ध स्थगित नहीं किया युद्ध करने के संकल्प में ही वह है। इसीलिए आप उस विषय में धीरज रखिए। यह अच्छाई है। ऊपर बताने क्या जा रहा है? भीम निर्वाण प्राप्त किया भीम कहलाने वाला युद्ध के लायक नहीं। इस स्थिती में ये पहले न बताकर उनके प्रिय पुत्र दुर्योधन का नाम बताकर उन्हें थोड़ा शांत कर गया। यह संजय की अच्छाई है। तीसरा क्या कर रहा है अर्थात् ''राजा वचन कुब्रवित'' कहा धृतराष्ट्र जीवन परियन्त दुःखी रहने का कारण दुर्योधन को राजा बनाना उनकी ओर प्रधान विरोधी एक गिर गया इसीलिए अब राज्य न रहा सही मेरी बातें में राजा सुन वे सन्तुष्ट हुए। समाचार देने की निपुणता दर्शाते

उन्होंने कहाँ ''राजा वचन रुब्रवित'', ''दृष्यतुपाण्डवानिकम् युडं दुर्योधस्तुधा।''

आचार्यमुपसंगम्य राजा वचन मब्रबित किसके निकट फिर से जाकर बात किये। भीष्म सेनापती के पास! उनके पास न जाकर द्रोण के पास क्यों गये। ऐसा संदेह आप को हुआ होगा। उसका समाधान द्रोणाचार्य इनके गुरु है ना गुरु के पास गये। भीष्म के निकट जाने पर क्या? दोण के निकट जाने पर क्या? स्वभाव, स्वरूप ये सब जानने वाले अभी तो आचार्य के पास ही गये। इस तरह संजय ने उन से कहा। हम संकल्प लेने से पूर्व गुरुप्रार्थना बाद में ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। तात्पर्य ईश्वर की प्रार्थना से पूर्व गुरुप्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि ईश्वर तक ले जाने वाले गुरु ही होता हैं। इसीलिए गुरुप्रार्थना बाद में ईश्वर। वह ईश्वर ही गुरु रूप में है। हमारे निकट कौन हैं गुरु वे किस रूप में हैं वे क्यों आये गुरु रूप में परमात्मा को मिलाने आए हैं। परमात्मा के पास ले जाने आए हैं? इस विषय का ज्ञान हमे कहाँ मिला भगवद्गीता से मिला जैसे भगवद्गीता के आरंभ में श्लोक प्रश्न धृतराष्ट्र का था। समाधान ''आचार्य मुपसंगम्य'' कहने पर यह अति छोटे वाक्य में दिखता है यह ''गुरुप सदनम्'', ''गुरुपगमनम्'' नाम से उपनिषदों में बहुत बड़े विषय के रूप में कहा गया है। पहले गुरु का आश्रय लेना चाहिए। गुरु का आश्रय लेने पर हमें तत्वज्ञान की प्राप्ती होती है। ऐसा उपनिषदों में स्पष्ट रूप में कहा गया है। केवल गुरु के पास जाने से मात्र बात नहीं बनती। गुरु के पास जाकर क्या करना चाहिए ये बाते उपनिषदों में लिखा कही गई भगवद्गीता में भी परमात्मा ने बहुत ही विस्तार से कहा वे सारे बाते दुर्योधन आचरण में नहीं लाते इसीलिए दुर्योधन गुरु द्वारा जो अपेक्षा वह रख रहे थे वह वे पा नहीं मिल रहे थे। दूर्योधन को इस समय किस प्रकार की अपेक्षा है? युद्ध में विजय वह प्राप्त हुई, नहीं क्यों प्राप्त नहीं हुई। गुरु के पास गये। अधिक कहा जाय तो भीष्म पितामह के पास जाने से अच्छा द्रोण के पास जाने में न्याय है। गुरु के पास जाकर मैं विजयी होना चाहता हूँ इसके लिए आप उपाय बतायें तब वे बताते। द्रोण के पास ऐसा कौन सा अस्त्र नहीं हैं? कितने व्यूह नहीं हैं? पाण्डव महावीरों में इनके कितने शिष्य नहीं हैं? सभी इनके शिष्य ही है ना। वह गुरु के निकट गया। विजय के लिए प्रार्थना की या नहीं तत्वज्ञान देने को कहा या नहीं कुछ नहीं पूछा। इसीलिए गुरु का आश्रय पाना चाहिए। गुरु के आश्रय से सर्वांग विनय से, होशियारी से हमे जो चाहिए उस कार्य को पूर्ण करवालेना चाहिए। उनके दिये उपदेशों को श्रद्धापूर्वक मन में उतार लेना चाहिए। यह भावना सर्वांगिण रूप में आने के लिए ''आचार्यमुपनम् संगम्य'' ऐसा उपनिषद में एक व्याख्या यहाँ दी गयी। इस श्रीमद्भगवद्गीता को हम गीतामृत क्यों कह रहे हैं हर शब्द में हर बात में जीवन के लिए जो चाहिए वैसे एक प्रधान अंश पर हम यह कह लेंगे। मानवजन्म को सार्थकता बनाने के अंश हर श्लोक में, हर वाक्य में, हर शब्द में, हर अक्षर में है। इसीलिए हम विशेषकर गीतामृत कहते हैं।

ऐसी गीतामृत में ''आचार्योपसदनम्'' गुरुपदनम् से यहाँ प्रारम्भ किया। यह गुरु गुरुसदनम् से दुर्योधन किस प्रकार की अपेक्षाएँ पूर्ण किया। हम जानेंगे। किस प्रकार से इन गुरु-शिष्य में संभाषण चला इन सारे प्रश्नों के समाधान हम जानेंगे।

कृष्णम् वंदे जगद्गुरुम्!

क्रमशः

लौकी से स्वास्थ्य का सौभाग्य

तेलुगु मूल - डॉ.सी.मधुसूदन शर्मा

हिन्दी अनुवाद - डॉ.एस.हरि,
मोबाइल - ९३९८४५४१६८

मानव के स्वास्थ्य परिरक्षण के लिए इस अनंत विश्व में महोपकार करनेवाले कई असंख्य एवं अपार गुणवाले पौधों को प्रकृति ने प्रदान किया है। इनमें कुछ आहार के रूप में और कुछ औषध के रूप में तथा कुछ आहार एवं औषध के रूप में प्रधानता प्राप्त कर चुके हैं। हमारे वाङ्मय में कहा गया हैं- *''पंच भूतात्मके देहे आहारः पांचभौतिकः। विपक्व पंचदा सम्यक् स्वानुगुणान् अभिवर्धयेत्।।''* अर्थात् शरीर पंचभूतात्मक है आहार भी पंचभूतात्मक है। आहार के रूप हमारे शरीर में प्रवेश करनेवाले पंचभूत के अंश हजम होकर कई परिवर्तनों के साथ धातुओं में जाकर विलीन होते हुए शरीर के पोषण के लिए, रक्षण के लिए, शरीर को ऊर्जा प्रदान करने तथा औषध के रूप में भी उपयोगी सिद्ध होते हैं। सभी वर्गों के लोगों को उपलब्ध में मिलता है। लौकी में कुछ हरे रंग के, कुछ हल्के पीले रंग के और कुछ हल्के सफेद रंग के होते हैं। उसी प्रकार लंबे और गोलाकार दोनों उपलब्ध होते हैं। अंग्रेजी में बाटिल गार्ड के नाम से और हिंदी में लौकी के नाम से कहलानेवाली 'लौकी' का शास्त्रीय नाम है - लाजिनेरिया सिसिरेरिया है। ये कुकुर्बिटेसी नामक वृक्ष परिवार से संबंधित सब्जी है।

लौकी को दाल, सांबार, चटनी, सब्जी, हलवा आदि की तैयारी में उपयोग किया जाता है। नवजात लौकी का उपयोग करने पर अधिक लाभदायक होता है। यह लौकी शारीरिक ताप को ठंडा करनेवाला आहार द्रव्य है। इसका सेवन करने पर कुछ लोगों में 'कफ दोष' बढने की संभावना है। वैसी हालत में २०० मि.ली. गरम पानी में, आधा चमच जीरे का चूर्ण, थोडा शक्कर मिलाकर छानकर सेवन किया जा सकता है। यह लौकी का विविध उपयोग -

मूत्र विसर्जन की समस्याओं के लिए :- रोजाना एक बार २०० मि.ली. पानी में, बिना चिलके के बनाया हुआ लौकी का पेस्ट १० ग्राम, आधा चमच जीरा, आधा चमच धनिया, आधा चमच ताड का गुढ मिलाकर... १०० मि.ली. पानी बचने तक उबाल लें। उतार कर ठंडा करें तथा छानकर सेवन करते रहने से मूत्र विसर्जन में जलन, मूत्र नियंत्रण न कर पाना, मूत्र में रक्त स्राव, मूत्र बराबर न आ पाना आदि समस्याओं के साथ पेट में जलन कम होता है। मधुमेह के रोगियों को ताड के गुड के बिना बाकी चीजों से औषध बनाकर उपयोग कर सकते हैं।

अधिक वजन को कम करने के लिए :- सुबह खाली पेट से १०० मि.ली. लौकी के रस में, २५ मि.ली. पानी, एक ग्राम दाल चीनी के टुकडे, ३-४ चुटकी के नमक, ३-४ चुटकी काली मिर्च का चूर्ण डालकर थोडा समय उबालकर उतारे तथा छानकर पीना चाहिए। ऐसा उपयोग करने से भूख का नियंत्रण होकर वजन कम होने के साथ-साथ शरीर को नुकसान पहुँचानेवाले बुरे कोलेस्ट्राल कम होकर अच्छे कोलेस्ट्राल बढते हैं।

लौकी बचाए छोटी उम्र में बाल सफेद होने से :- हफ्ते में २ या ३ बार पर्याप्त मात्रा में लौकी के पेस्ट आँवले के चिलके को भिगाकर आवश्यक पानी मिलाते हुए बाल की जडों में १० मिनट तक अच्छी तरह मालिश करना चाहिए। एक घंटे के बाद सिरोस्नान करते रहने से छोटी में बाल सफेद होने की समस्या कम होती है।

हैजे के दस्त से उत्पन्न नीरस एवं निर्जलीकरण से राहत :- लौकी का रस, नारियल का पानी दोनों को बराबर मात्रा में लेकर वैद्य की सलाह से निर्दिष्ट औषधों के साथ १० मिनट में एक बार इस द्रव को ३०-६० मि.ली. परिमाण में सेवन करते रहने पर बहुत जल्द उन समस्याओं से राहत मिलती है।

अधिक ताप कम होने के लिए :- रोजाना एक बार २५० मि.ली. पानी में, १०० ग्राम लौकी के चिलके को टुकडे बनाकर उसमें मूँग की दाल १० ग्राम मिलाकर आधा घंटा भिगाकर १०० मि.ली. पानी आने तक उबालकर, छानकर ठंडा होने पर पीते रहने से अधिक ताप कम होता है।

अनिद्रा दूर करने के लिए :- २०० मि.ली. लौकी का रस, ५० मि.ली. तिल का तेल मिलाकर अच्छी तरह से उबाल लेना है। उसे उतारकर ठंडा होने के बाद छानकर केश तैल के रूप में उपयोग करते रहने से अच्छी नींद लगती है। सिर का सूखा त्वचा, आँखों का जलन भी कम होता है। हाथ और पैरों पर लगाते रहने से हाथ और पैरों की दरारें कम होती है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

- श्री सी सुधाकर रेड्डी
मोबाइल - ९८६६०६०२६९

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रतिवर्ष २१ जून को मनाया जाता है। यह दिन वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घायु बनाता है। पहली बार यह दिवस २१ जून २०१५ को मनाया गया, जिसकी पहले भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने २७ सितंबर २०१४ को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी जिसमें उन्होंने कहा था कि- ''योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है; मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है; विचार, संयम और स्फूर्ति प्रदान करनेवाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करनेवाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति को खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन-शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है, तो आयें एक अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस को गोद लेने की दिशा में काम करते हैं।''

जिसके बाद २१ जून को ''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' घोषित किया गया। ११ दिसंबर २०१४ को संयुक्त राष्ट्र के १७७ सदस्यों द्वारा २१ जून को ''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के इस प्रस्ताव को ९० दिन के अन्दर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है।

औपचारिक व अनौपचारिक योग शिक्षको और उत्साही लोगों के समूह ने २१ जून के अलावा अन्य तारीखों पर विश्व योग दिवस को विभिन्न कारणों के समर्थन में मनाया गया। दिसंबर २०११ में, अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी, ध्यान और योग गुरु श्री श्री रविशंकर और अन्य योग गुरुओं ने पुर्तगामी योग परिसंघ के प्रतिनिधि मण्डल का समर्थन किया और दुनिया को एक साथ योग दिवस के रूप में २१ जून को घोषित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र को सुझाव दिया।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी की अपील के बाद २७ सितंबर २०१४ को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रस्ताव को अमेरिका द्वारा मंजूरी दी, जिसके बाद सर्वप्रथम इसे २१ जून २०१५ को पूरे विश्व में ''विश्व योग दिवस'' के नाम से मनाया गया।

इसके पश्चात 'योग - विश्व शान्ति के लिए एक विज्ञान' नामक सम्मेलन ४ से ५ सितंबर २०११ के बीच आयोजित किया गया। यह संयुक्त रूप से लिस्बन, पुर्तगाल के योग संघ, आर्ट ऑफ लिविंग फाउडेशन और यस.वी.वाई.ए.यस.ए (SVYASA) योग विश्वविद्यालय, बेंगलूर के द्वारा आयोजित किया गया। जगत गुरु अमृत सूर्यानंद के अनुसार विश्व योग दिवस का विचार वैसे तो १० साल पहले आया था। लेकिन यह पहली बार था जब भारत की ओर से योग गुरु इतनी बड़ी संख्या में इस विचार को समर्थन जिसका मतलब होता है आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलना। योग लग-भग दस हजार साल से भी अधिक समय से अपनाया जा रहा है। वैदिक संहिताओं के अनुसार तपस्वियों के बारे में प्रचीन काल से ही वेदों में इसका उल्लेख मिलता है। सिंधु घाटी सभ्यता में भी योग और समाधि को प्रदर्शित करती मूर्तियाँ प्राप्त हुई।

हिन्दू धर्म में साधु संन्यासियों व योगियों द्वारा योग सभ्यता को शुरू से ही अपनाया गया था, परन्तु आम लोगों में इस विधा का विस्तार हुए अभी ज्यादतर समय नहीं बीता है। बावजूद इसके, योग की महिमा और आवश्यकता को जानकर इसे स्वस्थ्य जीवन शैली हेतु बड़े पैमाने पर अपनाया जा रहा है; जिसका प्रमुख कारण है व्यस्त, तनावपूर्ण और अस्वस्थ दिनचर्या में इसके सकारात्मक प्रभाव।

योग साधना सूत्र एवं उनके प्रकार :

योग की प्रामाणिक पुस्तकों जैसे शिवसंहिता तथा गोरक्षशतक में योग के चार प्रकारों का वर्णन मिलता है। १) मंत्रयोग, जिसके अंतर्गत वाचिक, मानसिक, उपांशु और अणपा होता है। २) हठयोग, ३) लययोग, ४) राजयोग... जिसके अंतर्गत ज्ञानयोग और कर्मयोग आते हैं।

व्यापक रूप से पतंजलि औपचारिक योग दर्शन के संस्थापक माने जाते हैं। पतंजलि के योग, बुद्धि नियंत्रण के लिए एक प्रणाली है, जिसे राजयोग के रूप में जाना जाता है। पतंजलि के अनुसार योग के ८ सूत्र बताए गए है, जो निम्न प्रकार से है-

१) **यम :-** इसके अंतर्गत सत्य बोलना, अहिंसा, लोभ न करना, विषयासक्ति न होना और स्वार्थी न होना शामिल है।

२) **नियम :-** इसके अंतर्गत पवित्रता, संतुष्टि, तपस्या, अध्ययन और ईश्वर को आत्मसमर्पण शामिल है।

३) **आसन :-** इसमें बैठने का आसन महत्वपूर्ण है।

४) **प्राणायाम :-** सांस को लेना, छोड़ना और स्थगित रखना इसमें अहम है।

५) **प्रत्याहार :-** बाहरी वस्तुओं से, भावना अगों से प्रत्याहार।

६) **धारणा :-** इसमें एकाग्रता अर्थात् एक ही लक्ष्य पर ध्यान लगाना महत्वपूर्ण है।

७) **ध्यान :-** ध्यान की वस्तु की प्रकृति का गहन चिंतन इसमें शामिल है।

८) **समाधि :-** इसमें ध्यान की वस्तु को चैतन्य के साथ विलय करना शामिल है। इसके दो प्रकार हैं - सविकल्प और अविकल्प। अविकल्प में संसार में वापस आने का कोई मार्ग नहीं होता। अतः यह योग पद्धति की चरम अवस्था है।

भगवद्गीता में योग के जो तीन प्रमुख प्रकार बताए गए हैं वे इस प्रकार हैं -

१) कर्मयोग :- इसमें व्यक्ति अपने स्थिति के उचित और कर्तव्यों के अनुसार कर्मों का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करता है।

२) भक्ति योग :- इसमें भगवत कीर्तन प्रमुख है। इसे भावनात्मक आचरण वाले लोगों को सुझाया जाता है।

३) ज्ञान योग :- इसमें ज्ञान प्राप्त करना अर्थात् ज्ञानार्जन करना शामिल है।

योग के नियम :-

अगर आप यह कुछ सरल नियमों का पालन करेंगे, तो अवश्य योग अभ्यास का पूरा लाभ पाएँगे।

१) किसी गुरु के निर्देशन में योग अभ्यास शुरू करें।

२) सूर्योदय या सूर्यास्त के वक्त योग का सही समय है।

३) योग करने से पहले स्नान जरूर करें।

४) योग खाली पेट करें। योग करने से दो घंटे पहले कुछ न खायें।

५) आरामदायक सूती कपडे पहनें।

६) तन की तरह मन भी स्वच्छ होना चाहिए। योग करने से पहले सब बुरे खयाल दिमाग से निकाल दें।

७) किसी शांत वातावरण और सॉफ जगह में योग अभ्यास करें।

८) अपना पूरा ध्यान अपने योग अभ्यास पर ही केन्द्रित करे।

९) योग अभ्यास धैर्य दृढता से करें।

१०) धीरज से रहे। योग के लाभ महसूस होने में वक्त लगता है।

११) निरंतर योग अभ्यास जारी रखें।

१२) योग करने के ३० मिनट बाद तक कुछ न खायें। १ घंटे तक न नहाये।

१३) प्राणायाम हमेशा आसन अभ्यास करने के बाद करें।

१४) अगर कोई मेडिकल तकलीफ हो, तो पहले डॉक्टर से जरूर सलाह करें।

१५) अगर तकलीफ बढ़ने लगे या कोई नई तकलीफ हो जाए, तो तुरंत योग अभ्यास रोक दे।

१६) योगाभ्यास के अंत में हमेशा शवासन करें।

वर्तमान में योग को शारीरिक, मानसिक व आत्मिक स्वास्थ्य व शांति के लिए बडे पैमाने पर अपनाया जाता है। २१ जून २०१५ को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया है। प्रथम बार विश्व योग दिवस के अवसर पर १९२ देशों में योग का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली में एक साथ ३५९८५ लोगों ने योग का प्रदर्शन किया, जिसमें ८४ देशों के प्रतिनिधि मौजूद थे और भारत ने दो विश्व रिकार्ड बनाकर 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस' में अपना नाम दर्ज करा लिया।

कोरोना की वजह आजकल लोगों में ज्यादतः स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित करने लगे। मुख्यतः योगासन करनेवालों की संख्या बढ़ गई। दिन-ब-दिन इनकी संख्या बढनेवाली है। केन्द्रीय सरकार के विद्यालयों में 'योग' अध्यापक की नियुक्ति करके बच्चों को प्रशिक्षण दे रहे है। राज्य सरकार के विद्यालयों में योग अध्यापकों की जरूरत है क्योंकि आजकल बच्चों से लेकर बूढ़ों तक मानसिक तनाव बढ रही है। इसलिए योग साधना मानव जीवन में अनिवार्य बन गया है।

(गतांक से)

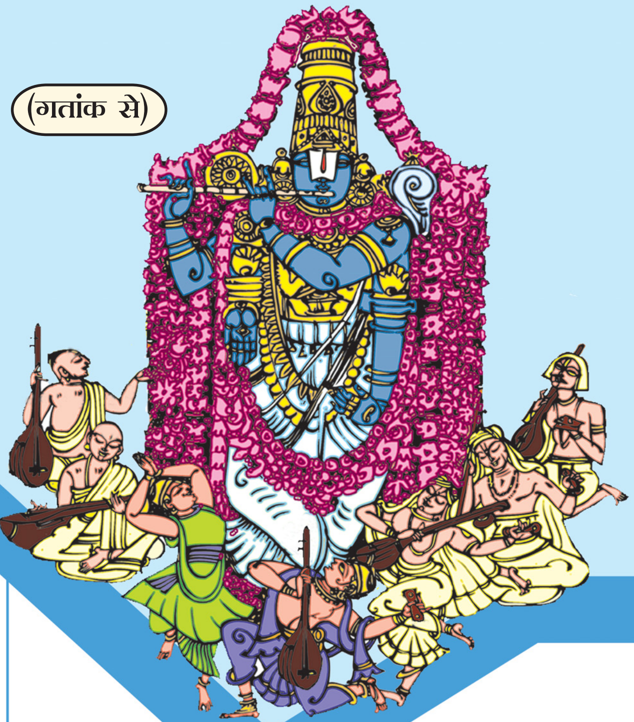

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु

हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
मोबाइल - ९४९०९२४६१८

श्री पुरंदरदास जी के साहित्य में श्रीनिवास

अपने गुरुदेव श्री व्यासराय जी के मुँह से निकले शुभ्र वचन 'दासरंदरे पुरंदरदासरय्या' (दास अथवा एकमात्र दास पुरंदरदास ही हैं) से गौरवान्वित श्री पुरंदरदास, श्री नारद के अवतारी पुरुष के रूप में प्रसिद्ध हैं। गुरु की स्तुति करते समय विजयदास जी ऐसा कहते हैं- 'मारजनकन सन्निधानदि सारेगानव माडुव। नारदरे ई रूपदंदलि चारुदरसन तोरिद', अर्थात् पुरंदरदास जी ऐसा दिखाई देते हैं मानो स्वयं नारद जी मन्मथ जनक की सन्निधि में अनर्गल गान करते हुए दर्शन दे रहे हों। श्रीहरि के संकल्प से श्रीनिवास नायक नाम से रूपांतरित होकर इन्होंने अपनी पूरी संपदा तृणमात्र मानकर त्याग दिया। वे गुरु व्यासराय से 'पुरंदर विट्ठल' की शरणागति प्राप्त कर, तत्समय से प्रामाणिक वेद-पुराण-इतिहास को आधार बनाकर चार लाख पछत्तर हजार भाव संपन्न पद या कीर्तनों की रचना की। उन्होंने समस्त भारत के प्रामाणिक पुण्यतीर्थों का संदर्शन किया और वहाँ-वहाँ की देवताओं, नदियों एवं श्रीमध्वाचार्यादि गुरुपरंपरा के समस्त गुरुओं की पदों के द्वारा स्तुति की, वेदांत, पुराण, इतिहास, उनिषद् संबंधी तत्वों पर संदर्भोचित रीति में प्रभु-मित्र-कांता सम्मिलित रूप की भांति, द्राक्षा-कदली-नारिकेल पाक (अंगूर-केला-नारियल का सम्मिश्रण जितना मधुरहोता है) की भांति, उपदेशात्मक पदों की भांति, अन्यान्य रूपों तथा प्रक्रियाओं में पदों की रचना कन्नड़ भाषा में करके गाया है। पुरंदरदास, जो कर्नाटक संगीत के पितामह के रूप में विभूषित हैं, उनके गाने केवल भजन के योग्य ही नहीं होते बल्कि शास्त्रीय रीति में राग-ताल युक्त तद्देशीय या मार्ग संप्रदाय के अनुकूल गाने योग्य स्थापित होते हैं। साहित्य एवं संगीत संप्रदाय के योग्य इनके गाने संपूर्ण तथा भावगर्भित मालूम पड़ते हैं। इतना ही नहीं, इनके पद, नाट्यशास्त्र के अनुकूल भी दिखाई देते हैं। शब्दलालित्य से विभूषित इनके कुछेक कीर्तन बाह्यतः छोटी आकृति के होने पर भी गहरी समुद्र की भांति सारगर्भित लगते हैं। इनके साहित्य की विशेषता कहते नहीं बनती। इनके पद काव्यसंप्रदाय, नाट्यसंप्रदाय, नाटकीय पद्धति, रमणीय भावों का स्फुरण करनेवाले शब्द जाल से युक्त, अर्थालंकार एवं शब्दालंकारों से युक्त, दीर्घसमासों से युक्त रहकर अपने में अनेकानेक प्रक्रियाओं से समाहित दिखाई देते हैं। इतिहासोक्ति है कि भक्त कवि, वाग्गेयकार पुरंदरदास की भक्ति एवं

प्रपत्ति से प्रसन्न होकर स्वयं पंढ़रिनाथ एवं तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने इनके सामने साक्षीभूत हुए। इसके प्रमाण में विजयदास जी कहते हैं- 'परमपुरुषनु विप्रनंददि करवनीड़ियाचिसे'- यानी विप्र के रूप में भगवान इनके सामने याचक बनकर आये थे। उनके पद स्वयं इनकी वाणी की पुष्टि करते हैं। सप्ताचल पर एक रात को भक्त के भेष में आकर स्वयं भगवान ने पुरंदरदास जी को पीने के लिए जल दिया था। एक अन्य स्थान पर पुरंदरदास जब आगंतुकों को भोजन परोस रहे थे, तब उनके शिष्य अप्पण्ण के भेष में भगवान आकर घी को परोसे थे।

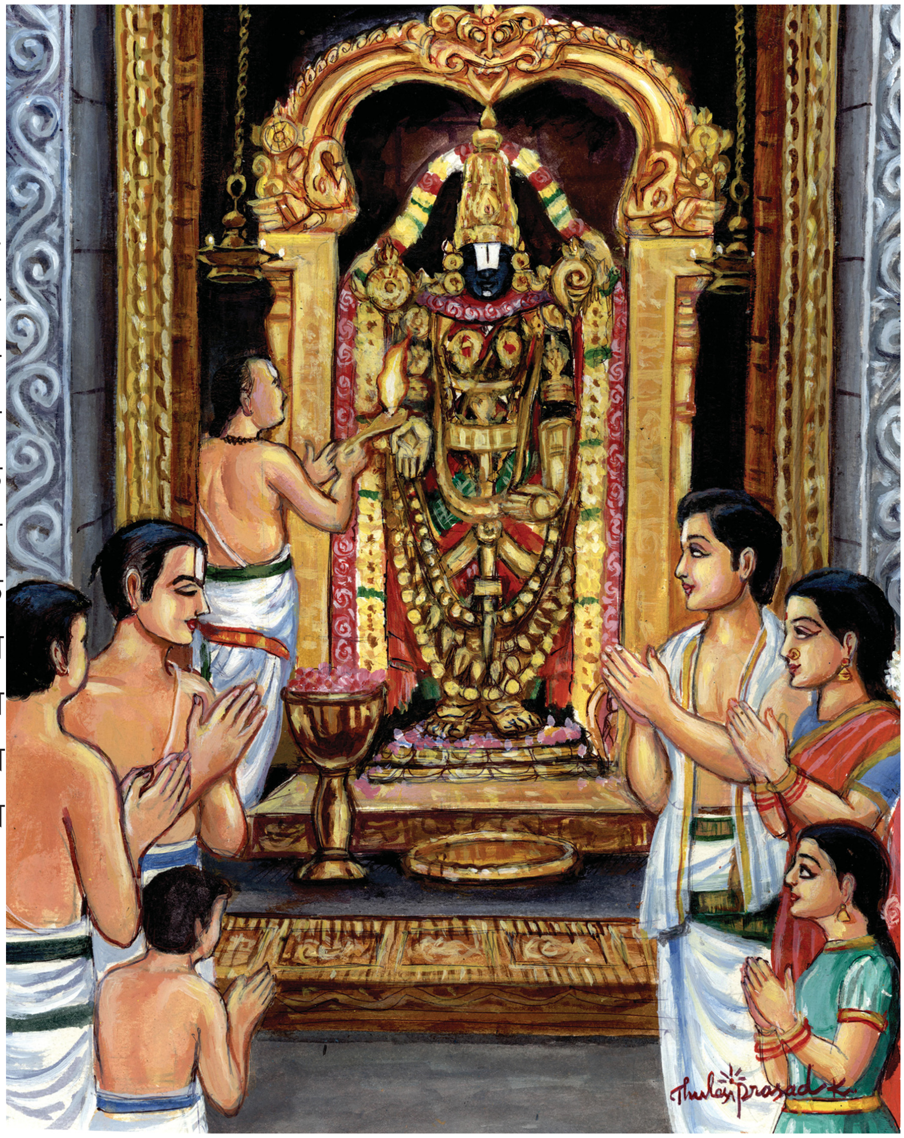

''पण्णव नेंदु ना नीरु तारेंदरे
बेण्णे कल्ल कृष्ण मरुलुमाडि।
चिन्नद गिण्डिलि नीरन्नु तंदरे
कण्णुकाणदे नाठोणदे पंढ़रिराय।।''

(तुम्हें छोटा बच्चा समझकर जब मैंने तुमसे पानी माँगा, तब हे कृष्ण! तुम मेरे लिए सुनहरे लोटे में पानी लाये थे)

''अप्पण्ण भागवतन रूपपु तानागि
तुप्पद बिंदिगे तंद सर्पशयनना।''

(अप्पण्ण भागवत के रूप में उस दिन को बिन माँगे तुम घी ला दिये थे ना)

पुरंदरदास ने अनेक बार श्री वेंकटेश्वरस्वामी जो भक्त सुलभ तथा हरिभक्तों के वरप्रदाता माने जाते हैं, उनका दर्शन प्राप्त किया। इतना ही नहीं, इनके पद इतने विशिष्ट हैं कि पदों का पदजाल श्रोताओं के सामने तिरुमलक्षेत्र, क्षेत्राधिपति श्रीनिवास, उनका आनंदनिलय, मंदिर के परिसर, स्वामिपुष्करिणी आदि के दृश्य मूर्तिवंत बनाकर खड़ा कर देता है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी के यशोगान में गाये गये इनके पद जनसामान्य तथा शास्त्रीय संगीत के निष्णातों के द्वारा निरंतर सुनने को मिलते रहते हैं, यथा- 'दासन माडिको एन्न स्वामी सांसिर नामद वेंकटरमण' (नादनामक्रिया) मुझे अपना दास बना लो हे वेंकटेश्वर स्वामी, 'श्रीनिवासनीने पालिसो श्रितजनपाला' (राग-आनंदभैरवी), (हे भगवान! हम पर शासन चलाओ), 'बारैय्या वेंकटरमण' (राग-सावेरि) (हे वेंकटरमण! आओ स्वामी), 'वेंकटरमण

वेदांत निन्नय पाद' (राग-आभि) (हे वेंकटप्रभू! तेरे चरण ही वेदांत है यानी मुझे शरणागति दो), 'बंदुनिंतिहनोडि' (राग-मध्यमावति), (स्वामी, देवेरी सहित आया! देखिए), 'दणियनोडिदेनु' (राग-कापि), 'तिरुपति वेंकटरमण' (राग-खरहरप्रिय)। इन पदों के साथ-साथ, 'श्रीनिवासनु ओलियनु केलोज्ञानो पार्जने माड़दले', 'न नेनु माडिदेनो वेंकटराय', 'कननु कंडेने मनदलि कलवल गोंडेने, 'वेंकटरमणनेबारों, 'वेंकटेश निन्ननामक्के', 'तप्पुगलेल्ल नीनोप्पिकोल्लो', 'निन्न ने नंबिदे नीरजनयन', 'कंडे कंडे स्वामियबेडि कंडे', 'पंकजमुखियरेल्लरु बंदु लक्ष्मी वेंकटरमणगारुति एत्तिरे' आदि भी यश प्राप्त पद हैं। उपर्युक्त सारे पद, श्रोताओं के मन में श्रीनिवास के प्रति भक्ति एवं प्रपत्ति को उद्दीप्त करने, श्रीनिवास का तत्वज्ञान, स्वामी की सार्वभौमिकता का प्रकटन, शास्त्रीय एवं सांप्रदायिक तत्वों के सम्मिलित रूप हैं। पुरंदरदास जी, जब तिरुमल की यात्रा करके, स्वामी का दर्शन प्राप्त किया, तब उनके मन में भगवान के प्रति उनकी जो अनुभूति उद्भूत हुई, उसे उन्होंने निम्नलिखित पद में प्रकट किया -

'कंडे कंडे स्वामिय बेडिकोंडे।।

कंडे तिरुपति वेंकटेशन कारणात्मक सार्वभौमन।

कामितार्थ गली वदेवन! करूणानिधि

येंदेनिसि मेरवन।' (राग-मुखारि)

(मैंने देखा! मैंने देखा, स्वामी को, तिरुपति श्री वेंकटेश्वर स्वामी को मैंने देखा, स्वामी करुणामयी हैं, सार्वभौमी हैं, कामितार्थों को प्रदान करनेवाले स्वामी हैं। वह 'करुणासिंधु' नामांकित स्वामी हैं।)

'कोटि सूर्य प्रकाशवेनिप किरीटवनु मस्तकदिकंडेनु।

नोट काश्चर्यवाद नगेमुखनोसलोलगे

तिरुमणि यकंडेनु।

साटि इल्लद शंख चक्र चतुरहस्तदलिरलु कंडेनु।

बूटकदमातल्ल केलिशे भूरिदैवद गंड़ संघ्रिय।।'

(सहस्र सूर्यो की कांति भरा स्वामी का मुकुट मैंने स्वामी के सिर पर देखा, विस्मय कर देनेवाले उनके हँस मुख वदन के ललाट पर तिरुमणि (तिलक), चार हस्तोंवाले के दो हाथों में शंख तथा चक्र तथा समस्त देवताओं के देवता, देवादिदेव श्री वेंकटेश्वर स्वामी के पादपद्मों, चरणकमलों का दर्शन मैंने किया।)

क्रमशः

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - ३

वेङ्कटाद्रि पर वराह भगवान का वास तथा तत्परिणामतः पर्वत का महत्त्व

जब से श्री वराह स्वामी ने पृथ्वी की रक्षा की और गरुड ने वेङ्कटाद्रि को वैकुण्ठ से लाकर पृथ्वि पर बसाया, तब से वे लक्ष्मी समेत इस पहाड पर अव्यक्त रूप से रहने लगे। इस पर्वत की चोटियाँ, जल धाराओं से युक्त होकर, तपस्यारत पुण्यात्मओं से विलसने लगीं। ब्रह्म ने स्वयं स्पष्ट रूप से उद्घोषित किया कि स्वामी श्वेत वराह कल्प के अन्त तक यहाँ अधिवसित रहेंगे। हर कल्प में वे पृथ्वी की रक्षा कर, स्थापित और पुनः-पुनः सृजित करते ही रहेंगे। ऋषि-मुनियों द्वारा यह कल्प *श्वेत वराह कल्प* नाम से मान्यता पायेगा।

(हमारे संस्कार संकल्पों में भी श्वेत वराह कल्प का स्मरण किया जाता है। पहाडी श्रृंखलाओं से आवृत क्षेत्र ही *श्री श्वेत वराह क्षेत्र* है।)

जब-जब पाप, पवित्रता को नष्ट पहुँचाते हैं, जब-जब धर्म को हानि पहुँचती है तथा अधर्म का विस्तार होता है, राक्षसों और दुष्टों का विकट रूप उभरता है, तब-तब भगवान वराह नर-देव के रूप में अवतरित होते हैं। समय के अनुरूप रूप-धारण कर पापों और पापियों का नाश करते हैं। सुधर्म की स्थापना के साथ-साथ पवित्रता को भी सुरक्षा देते हैं। वेद विद्याओं को प्रोत्साहित करते हैं। अपने वास क्षेत्र से सभी प्राणियों के सामने प्रकटित होते हैं। श्रीलक्ष्मी, देवता समूह तथा अन्य सेवक वृन्द के साथ शेष-शैल पर भ्रमण करते रहते हैं। वेङ्कटाद्रि पर अपना स्थिर वास बनाते हैं। यह सब इसलिए कि वे इस क्षेत्र को स्वर्ग से अधिक आनंद प्रदायक मानते हैं। उनका विश्वास है कि यह अत्यंत पवित्र क्षेत्र है। स्वर्ग, सूर्य लोक और अपने वैकुण्ठ से भी यह क्षेत्र उन्हें अत्यंत प्रिय है।

आस्थाय श्वेत - पोत्रित्वं - उज्जहार धरां यदा।

(श्लोक 4)

तदैवानाय्य वैकुण्ठाद अचलं गरुडेन वै।
कल्पादावेव भगवान लीलारस महोदधिः।।

(श्लोक 5)

विहरन रमया - शार्धम् दरी - निर्झर सानूषु।
प्रकाशश्च प्रकाशश्च तिष्ठत एव सदा गिरौ।।

(श्लोक 6)

यावत् - कल्पं वसत्येव प्रोक्तां च परमेष्ठिना।
कदाचित् पुण्य - शैलेभ्यो दर्शनं वितरत यसौ।।

(श्लोक 7)

कल्पे कल्पे च धरणीं उद्धरत एवं - एव हि।
श्वेत वाराह रूपेण धरणी चोधृता यत:।।

(श्लोक 8)

श्वेत वाराह कल्पस्याद आख्यया मुनयोः ययम्।।

(श्लोक 9)

सर्वदा शेष शैलेन्द्रे विहरन रमया सह।
नित्यैर्मुक्तैश्च देवैश्च काम - रूपैश्च संयुवैत:।।

(श्लोक 13)

तिष्ठत - एव सदा तस्मिन वेङ्कटाख्ये नगोत्तमे।
वैकुण्ठ - स्वर्ग सूर्येभ्यः स्वगेहेभ्योऽधिक अप्रिय:।।

(श्लोक 14)

अयं भगवतो हृद्यः पर्वत: पुण्य - कानन:।।

(श्लोक 15, अध्याय 36)

(वराह पुराण, भाग-1, अ. 4, श्लो 4-15)

यह पर्वत मूलत: स्वर्ग के महाविष्णु की *क्रीडाद्रि* है। इसे जब वराह स्वामी ने अपना वास क्षेत्र बनाया, तो इसका वैभव और अधिक बढ़ा। इसकी शक्तियाँ अनगिनत और अनमोल हो गयीं। इसीलिए यहाँ पर मानव शक्ति का भी फलीभूत होना अवश्य संभव हो जाता है। *मंत्रसिद्धि, ज्ञान सिद्धि* और *कर्म सिद्धि* आदि की, बिना अवरोध के प्राप्ति सहज और सरल है। यहाँ तक कि स्वल्प आध्यात्मिक कार्यक्रम भी इस पर्वत पर संपन्न हो जाय, तो इच्छित संकल्पों की सिद्धि में संपूर्ण सहायक हो जाते हैं। समस्त पवित्र तीर्थ इस पर्वत पर विराजित हैं। विश्वास और भक्तिपूर्वक उपासना से भक्त की (साधक की) सारी आकांक्षाएँ सिद्ध होती हैं। ज्ञानार्थी ज्ञान सिद्ध हो जाता है। उसे विद्वत्ता समग्र रूप से संप्राप्त होती है। जो भक्त सुवर्ण आदि की प्राप्ति से संपन्न होना चाहता है, उसे अवश्य प्राप्त होता है। जो सत्संतान की आकांक्षा से यहाँ पहुँचता है, उसे अवश्य संतान की प्राप्ति होती है। जो राज्याधिकार चाहता है उसे वह मिल ही जाता है। जो शारीरिक कमियों से निवृत्त हो सुखी रहना चाहता है, उसे स्वस्थता प्राप्त हो जाती है। स्वास्थ्य सिद्धि सरल हो जाती है। सभी भक्तों की इच्छाओं को पूरने का पवित्र क्षेत्र यही है। धन, धान्य, पशु संपत्ति आदि की इच्छाएँ भी पूर्ण होती हैं।

मंत्रसिद्धिस्तपस्सिद्धिर्यज्ञा सिद्धि स्तथैव हि।।

(श्लोक 15)

काम्यस्य कर्मण: - सिद्धिर्येवं - अन्याश्च सिद्धय:।
भवन्त्यत्र नराणां च न हि विघ्नादिकं क्वचित्।।

(श्लोक 16)

अल्पेन तपस्याभीष्टं सिध्यत - यस्मिन - गिरौ - वरे।
सर्व तीर्थानि सततं पुण्यान - यत्रैव सन्ति हि।।

(श्लोक 17)

य एवं सेवते नित्यं श्रद्धा - भक्ति समन्वित:।
ज्ञानार्थि ज्ञानं आप्नोति द्रव्यार्थि कनकं बहु।।

(श्लोक 18)

पुत्रार्थी पुत्रं आप्नोति नृपो राज्यं च विन्दति।
व्यंगश्च सांग सद्रूपं प्रशून धान्यानि विन्दति।।

(श्लोक 19)

यं यं कामयते मर्त्यः तं तं आप्नोति सर्वथा।।

(श्लोक 20)

(वराह पु. भाग-1, अ. 4, श्लो. 15-20)

कनकाचल पर आठ प्रकार के खान हैं। वे केवल पवित्रात्माओं को ही दर्शन भाग्य प्रदान करते हैं। युग

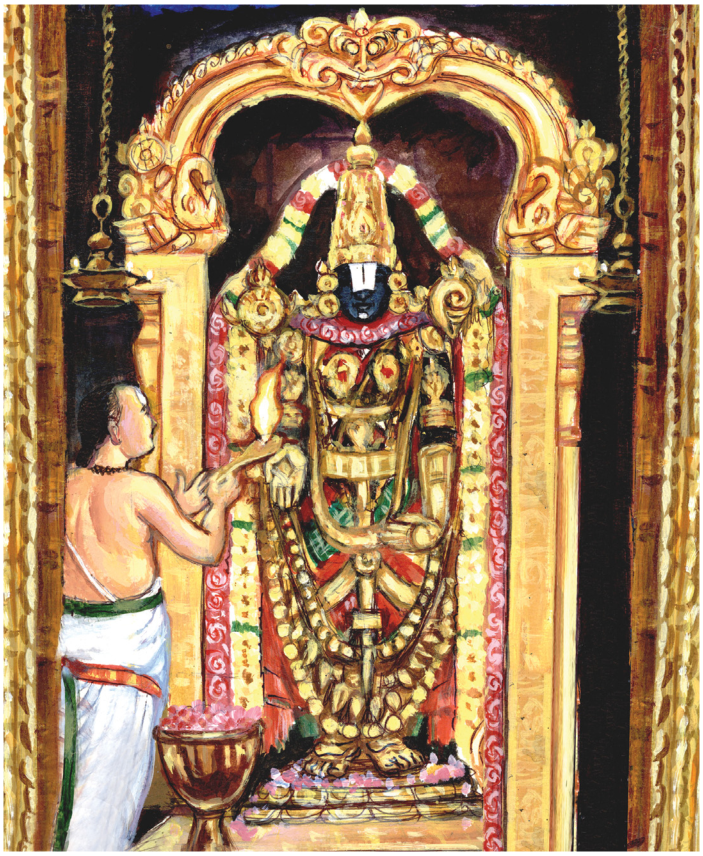

युगों से यही होता आ रहा है। यह श्रीनिवास गिरि है। भगवान श्रीनिवास का अधिवास पर्वत है। एक समय यह सुवर्ण पर्वत के रूप में दिखाई देता है, तो एक समय ज्ञान के प्रकाश के रूप में। एक समय वज्र-राशियों का जैसा दिखता है तो एक समय श्रीनिवास के दिव्य आवास के लिए अलंकृत दिव्य स्थली के रूप में। कभी पत्थरों का पहाड रूप में परिलक्षित होता है, तो कभी दिव्य धाम बनकर ये परिवर्तन समय के आवर्तन के साथ घटित होते रहते हैं।

परिणामतः कोई भी मनुष्य इसके महत्वपूर्ण रूप का न तो सही अनुमान लगा सकता है और न ही पवित्र प्रकृति के स्वरूप की कल्पना कर पाता है। वास्तव में यह वेङ्कटाद्रि प्राकृतिक तथा स्वर्णिम आभा से युक्त है। कलियुग में यह सामान्य पत्थरों का पर्वत ही लगता है।

अष्टानाम खनयः सन्ति लोहानां कनकाचले।
युग भेदेन दृश्यंते नराणां पुण्य कर्मणाम्।।

(*श्लोक 30*)

श्रीनिवास गिरिश्चयं कदाचित कनकाचलः।
कदाचित ज्ञानरूपोयं कदाचिद् रत्नरूपकः।।

(*श्लोक 34*)

श्रीनिवास इवाभाति कदाचिद् भूषणोज्वलः।
काल भेदेन केषानचित प्राकृताचल रूपधृत।।

(*श्लोक 35*)

अप्राकृतस्स्वर्ण सानुर अपि श्री वेङ्कटाचलः।
प्राकृताचलवद् भूमौ भविष्यति कलौ युगे।।

(*श्लोक 36*)

(*वराह पु. भाग-1, अ. 26, श्लो. 33*)

संपूर्ण भक्ति से इस पर्वत पर चढनेवालों के पैरों में शक्ति बढ़ती है। पंगु गिरि लांघते हैं। अन्धों के नेत्र कमल सदृश हो निर्मल दृष्टि पाते हैं। मूक वाक्‌शक्ति पाकर ज्ञान प्राप्ति के मार्ग पर बढता है। बधिर को सब कुछ सुनाई देता है। निस्संतान स्त्री बहु संतानवती बनती है। गरीब धनी बनता है। यह सब भक्ति से ही संभव है जो विश्वास और समर्पण भाव से युक्त रहती है। समुन्नत वरदान शक्ति से यह पर्वत विभासित है। इस सबसे यह स्पष्ट विदित है कि व्यक्ति संपूर्णतया और निश्चिततया वेङ्कटाद्रि से शुद्ध प्रकृति पा सकेगा। स्वस्थ और स्वच्छ मन पायेगा।

वेङ्कटाद्रौ परां भक्तिं वहंगच्छति चेदगिरम्।
पंगुर्जंघाल एव स्याद अचक्षुः पद्मलोचनः।।

(*श्लोक 31*)

मूको वाचस्पति दूराश्रावी तु बधिरो भवेत।
वंध्या तु बहु पुत्रा च निर्धन स्साधनो भवेत।।

(*श्लोक 32*)

एतत सर्व गिरौ भक्ति मात्रेनैव भवेद ध्रुवम्।
तत्वतो वेङ्कटाद्रेस्तु स्वरूपं वेत्तिकः पुमान।।

(*श्लोक 33*)

(*वराह पु. भाग-1, अ. 8, श्लो. 31 - 33*)

क्रमशः

श्री प्रपन्नामृतम्

(२२वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

यतीन्द्र श्रीरामानुजाचार्य द्वारा श्री कुरेश तथा दासरथी स्वामी को चरमश्लोकोपदेश

तदनन्तर श्री कुरेश स्वामी ने यतिसार्वभौम श्रीरामानुजाचार्य को साष्टांग प्रणिपात करके प्रार्थना की कि भगवान! मुझे चरमश्लोकार्थ प्रदान किया जाय। ''उनकी प्रार्थना सुनकर यतिश्रेष्ठ श्रीरामानुजाचार्य बोले कि श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी का आदेश है कि इस अर्थ को प्रदान करने के पहले जिज्ञासु की एकवर्ष तक परीक्षा करनी चाहिये। शारदाशोकनाशक श्रीरामानुजाचार्य की वाणी सुनकर श्री कुरेशाचार्य जी बोले-शरीर अस्थिर है। अतः एक साल की मैं कैसे प्रतीक्षा करूँ?'' श्री कुरेशाचार्य जी की वाणी सुनकर भगवान रामानुजाचार्य बोले कि ''एक मास उपवास करके सद्गुरु गृह में आकर इस मन्त्र को ग्रहण करने वाला ही उत्तम अधिकारी है।'' इसके बाद एक मास तक उपवास करके शास्त्रोक्त विधि से चरमश्लोक प्राप्त्यर्थ प्रार्थना करने वाले श्री कुरेश स्वामी को कृपामात्रप्रसन्नाचार्य श्रीरामानुजाचार्य स्वामी ने तात्पर्यार्थ के साथ चरम श्लोक प्रदान किया।

श्री कुरेश स्वामी के चरम श्लोकार्थ प्राप्ति के बाद श्रीदाशरथी स्वामी आकर यतिराज रामानुजाचार्यजी से चरम श्लोकोपदेश के लिये प्रार्थना करने लगे। उनकी प्रार्थना सुनकर श्रीरामानुजार्चजी बोले - ''दाशरथी! श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी मुझे केवल कुरेश को ही चरम श्लोकार्थ प्रदान करने का आदेश दिये थे। अतः अब चरम श्लोकार्थ की प्राप्ति के लिये तो तुम्हें श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी की सन्निधि में ही जाना होगा।'' आचार्य की बातें सुनकर श्रीदाशरथी स्वामी शीघ्र ही श्रीगोष्ठिपूर्ण स्वामी के सन्निकट जाकर उपर्युक्त अर्थ प्राप्ति के लिये प्रार्थना करने लगे। किन्तु श्रोगोष्ठीपूर्ण स्वामी चरमश्लोकार्थ प्रदान की तो बात ही क्या उनकी ओर देखे तक नहीं। किन्तु इस पर भी श्रीदाशरथी स्वामी घबराये नहीं निरन्तर छः महीने तक उनकी परिचर्या में लगे रहे एक दिन उनके ऊपर प्रसन्न होकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी बोले- ''लगता है जैसे आपका सम्बन्ध कृपामात्र प्रसन्नाचार्य श्रीरामानुजाचार्य से है। आप कौन हैं और किस लिए यहाँ आये हैं?'' श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी की वाणी सुनकर श्रीदाशरथी स्वामीजी बोले- ''श्रीमान्! मैं यतिराज श्रीरामानुजाचार्य का शिष्य हूँ, मेरा दाशरथी नाम है, और वे ही आपके यहाँ मुझे चरमश्लोकार्थ की प्राप्ति के लिए भेजे हैं।'' श्रीदाशरथी की वाणी सुनकर तत्त्वज्ञ श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी बोले- संसार में तीन मद पाये जाते हैं- १) विद्यामद, २) धनमद और ३) कुलीनता (सत्कुल में जन्म) का मद। सज्जनों में वे तीनों मद नहीं पाये जाते। अतः इन तीनों मदोंपर उनमें

देह सम्बन्धी होने तथा अपने में कुलीनता व धनवान् होने का मद सर्वदा त्याग देना होगा। इनसे रहित महात्मा श्री रामानुजाचार्य की ही शरण में जाओ, वे ही तुम्हें चरमश्लोक और उसका तत्त्वार्थ प्रदान करेंगे श्रीदाशरथी स्वामी श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी का उपर्युक्त आदेश पाकर श्रीरंगम् आकर यतिसार्वभौम श्रीरामानुजाचार्य को सम्पूर्ण बतलाकर विनीत भाव से हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े हो गये। इसी बीच गुरुदेव श्रीमहापूर्णाचार्य स्वामी की पुत्री अतुलायी शोक समाकुल अपने पति के गृह से आकर कहने लगी- ''पिताजी! पतिगृह में मुझे रात्रि के समय अकेले बहुत बड़े परिवार के लिए सुदूर जलाशय में जल लाने जाना पड़ता है। अतः साथ चलने के लिए में अपने श्वश्रु से (सास) निवेदन की तो उन्होंने कहा-अनार्ये क्या मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ कि तुम्हारे साथ जलाशय चलूँ? तुम्हें नौकर की आवश्यकता हो तो अपने बापके यहाँ से ला। अतः पिताजी मुझे इस काम के लिए कोई सेवक दीजिये।'' पुत्री की प्रार्थना सुनकर श्रीपूर्णाचार्य स्वामीजी बोले- ''तुम जानती हो कि मैं असमर्थ हूँ, तुम्हारा भाई (श्रीरामानुजाचार्य) यहाँ के मठ में निवास करता है वही तुम्हारे शोक को दूर करेगा। उसीसे जाकर कहो।'' पिता की आज्ञा पाकर अतुलायी ने यतिराज श्रीरामानुजाचार्य के पास आकर सभी बातें बता दीं। गुरुपुत्री (बहन) की बातें सुनकर भगवान श्रीरामानुजाचार्य ने श्रीदाशरथी स्वामी को सभी श्रीवैष्णवों के सामने आदेश दिया। तुम इस गुरुपुत्री के घर जाकर सभी प्रकार के कैंकर्यों को बिना संकोच के करो। यतीन्द्र श्रीरामानुजाचार्य की आज्ञा पाकर श्रीदाशरथी स्वामी अभिमान रहित होकर वहाँ जाकर सभी प्रकार के छोटे-से-छोटे कैंकर्यों को करने लगे।

एक समय उसी ग्राम के निवासी विद्वान् श्रीवैष्णव ब्राह्मण उस घर के लोगों को किसी श्लोक का शास्त्र विरुद्ध मनमुखी अर्थ कह रहे थे, उसे सुनकर श्रीदाशरथी स्वामी बोले- ''विद्वन्! आपका कहा गया अर्थ सम्प्रदाय विरुद्ध है।'' इसे सुनकर क्रुद्ध वे बोले- ''रसोइये! तुम्हें शास्त्रार्थ पर विचार की कोई आवश्यकता नहीं, जाकर जल क्यों नहीं भरते? संसार और देवलोक, शास्त्र तथा रसोईया इन सबों की संगति नहीं होती।'' उन श्रीवैष्णव के उक्त अवहेलना पाकर भी श्रीदाशरथी स्वामी पूर्वापरपर्यालोचन करते हुए उस श्लोक का अर्थ बतलाये। उनके पाण्डित्यपूर्ण उस अर्थ को सुनकर अतुलायी सहित सभी श्रीवैष्णव बड़े ही प्रेमावित हुए और भयभीत होकर पूछने लगे- ''श्रीमन्! आप तो सर्वज्ञ है और यह दासकर्म क्यों करते है?

समस्त श्रीवैष्णवों को उत्तर देते हुए श्रीदाशरथी स्वामी बोले- ''आपके घर में इस काम को करने के लिए मुझे यतिपति श्रीरामानुजाचार्यजी से आज्ञा मिली है।'' उनकी यह वाणी सुनकर आबाल वृद्ध उनकी पूजा करके अपने घर में लिवा लाये और अपने अज्ञात अपराध के लिये क्षमा याचना करते हुए बोले- ''श्रीमन्! हम लोगों के समस्त अपराधों को क्षमा करके आप अपने स्थान को जायें।'' उन लोगों की उपर्युक्त प्रार्थना सुनकर श्रीदाशरथी स्वामी बोले- ''मैंने जिनकी आज्ञा से यह काम करना प्रारम्भ किया उनकी आज्ञा के बिना कैसे और कहाँ जाऊँ?'' उनकी यह बात सुनकर उस घर के लोग शीघ्र ही भगवान रामानुजाचार्य के पास आकर सम्पूर्ण वृत्तान्त बतलाये। उस समाचार को सुनकर आचार्य श्री दाशरथी स्वामी के यहाँ अपना एक शिष्य भेजकर उन्हें बुलवा लिए। श्रीदाशरथी स्वामी भी आकर भाष्यकार के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उन्हें देखकर कृपामात्र प्रसन्नाचार्य श्रीरामानुज स्वामी शीघ्र ही चरमश्लोकार्थ उन्हें प्रदान किये तथा श्रीवैष्णव के घर में दास्य कर्म करने के कारण उनका श्रीवैष्णवदास यह नामकरण किये।

तदनन्तर यतीश्वर श्रीरामानुजाचार्यजी भगवत्पाद यामुनाचार्य के पुत्र श्रीवररंगाचार्यजी के घर जाकर सम्पूर्ण द्राविणाम्नाय (द्रविडवेद) का अध्ययन करके अपने दाशरथी प्रभृति समस्त शिष्यों को उपदेश करते हुए अपने मठ में सूख पूर्वक निवास करने लगे।

॥ श्रीप्रपन्नामृत का २२वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ॥

क्रमशः

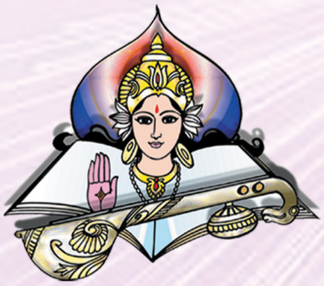

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

मोबाइल - ९९४९८७२१४९

अष्टमः पाठः - अष्टम पाठ

कश्चित् = कोई एक	कतिचित् = कुछ	किञ्चित्, ईषत् = थोडा सा
एकत्र = एक ही स्थान में	मा = मत	नो चेत् = नहीं तो (अगर)
स्युः = कुछको रहना	स्यात = आप होंगे	स्याम = यहाँ हैं (हम)

प्रश्न :
1. तत्र कश्चित् स्यात्।
2. नो चेत् यूयं तत्र स्यात।
3. कतिचित् तत्र सन्ति।
4. वयम् अत्र स्याम।
5. तत्र किञ्चित् अपि नास्ति।
6. यूयं तत्र मा स्यात।
7. कतिचित् अत्र स्युः।
8. अत्र किम् मपि नास्ति।
9. एते कतिचित् तत्र नासन्।
10. वयं कतिचित् अत्र स्मः।

जवाब :
1. वहाँ कोई एक होगा।
2. नहीं तो आप वहाँ होंगे।
3. वहाँ कुछ हैं।
4. हम यहाँ हैं।
5. वहाँ कुछ भी नहीं हैं।
6. आप वहाँ नहीं रह सकते।
7. कुछ को यहीं रहना है।
8. यहाँ कुछ भी नहीं है।
9. इनमें से कुछ वहाँ नहीं थे।
10. हम में से कुछ यहाँ हैं।

प्रश्न :
1. आप में कुछ यहाँ हैं।
2. हम में से कुछ वहाँ होंगे।
3. यहाँ कोई नहीं है।
4. जो कल वहाँ था उसे यहाँ भी रह सकता है।
5. हमें कहाँ होना चाहिए।
6. किसी तरह उन्हे यहाँ होना चाहिए।
7. अगर आप एक ही स्थान में होंगे।
8. अभी यहाँ कोई नहीं है।
9. क्या आप रात को वहाँ रुकना चाहते है?
10. नहीं तो हम वहीं रहें।

जवाब :
1. यूयं कतिचित् अत्र स्यात।
2. वयं कतिचित् तत्र स्याम।
3. अत्र केऽपि न स्युः।
4. तत्र ह्यः यः आसीत् सः अत्रापि स्यात्।
5. वयं कुत्र स्याम।
6. किं वा तेऽपि अत्र स्युः।
7. यूयं एकत्र स्यात।
8. इदानीं तत्र केऽपि न सन्ति।
9. यूयम् अद्य नक्तं तत्र स्यात किम्?
10. नो चेत् वयं तत्र स्याम।

कारण और कार्य

- श्रीमती प्रेमा रामनाथन
मोबाइल - ९४४३३२२२०२

महाभारत का युद्ध करने के लिए युद्ध मैदान में उचित तैयारियाँ हो रही थीं। पांडव और कौरवों के बीच युद्ध करने के लिए चुने गये कुरुक्षेत्र में होने वाले अनेक पेडों को हटाने हाथियों की सहायता ली जा रही थी। तब एक पेड पर एक गौरैया अपने बच्चों के साथ घोंसले में अपना जीवन बिता रहा था। एक हाथी उस पेड को हिलाकर उखाड रहा था, तब वह घोंसला यकायक जमीन पर गिर पडा। जिससे भयभीत गौरैया ने बाहर आकर इधर-उधर देखा और पाया कि थोडी दूर पर भगवान कृष्ण और महान वीर अर्जुन बातें कर रहे थे।

वह गौरैया ने कृष्ण के निकट आकार पूछा, ''यहाँ क्या हो रहे है? पेड सब क्यों काटे जाते हैं?''

यह सुनकर कृष्ण ने कहा, ''इस स्थान पर पांडव और कौरवों के बीच महा युद्ध चलने वाला है। इसलिए पेड सब काटे जा रहे हैं।''

यह सुनकर गौरैया को बडा दुःख हुआ। फिर वह कृष्ण को देखकर अपना निवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा, ''हे कृष्ण! मेरे बच्चे तो इतने छोटे हैं और उनको उडना भी नहीं आता। अब उनकी दशा क्या होगी। तुमको ही उनकी रक्षा करनी चाहिए।''

तब कृष्ण ने कहा, ''नियति के विधान को कौन जीत सकता है कालचक्र तो सदा घूमता रहता है। इसलिए वह जरूर अपना कर्तव्य करेगा।''

उसके बाद कृष्ण ने अर्जुन को देखकर कहा, ''हे अर्जुन! तुम जरा अपना धनुष-बाण मेरे हाथ दो। अब मुझे एक जरूरी काम है।''

अर्जुन ने तुरंत अपना धनुष उनके हाथ में सौंप दिया। तब कृष्ण ने पास में पेड को हिला रहे हाथी पर अपना बाण छोडा। वह बाण तो हाथी को न मारकर उसके गले पर बंधी हुई घंटी को नीचे गिराया। यह देखकर अर्जुन ने समझा कि कृष्ण का निशाना चूक गया है, इसलिए वह तुरंत हँस पडा। फिर उसने उनको देखकर कहा, ''यदि आप पहले ही मुझसे बता देते तो मैं उस हाथी को मार दिया होता। खैर, अब वह धनुष मेरे हाथ में दीजिए, मैं उस हाथी को क्षण भर में गिरा देता हूँ।''

यह सुनकर कृष्ण ने उसे लौटाते हुए कहा, ''अपना धनुष ले लो। अब मैं उस हाथी को मारना नहीं चाहता।''

तब अर्जुन ने पूछा, ''ऐसा हो तो आपने फिर उस हाथी पर बाण क्यों छोडा?'' उसका जवाब देते हुए कृष्ण ने कहा, ''वह तो अबोध गौरैया के घोंसले को नाश करने का दंड है।''

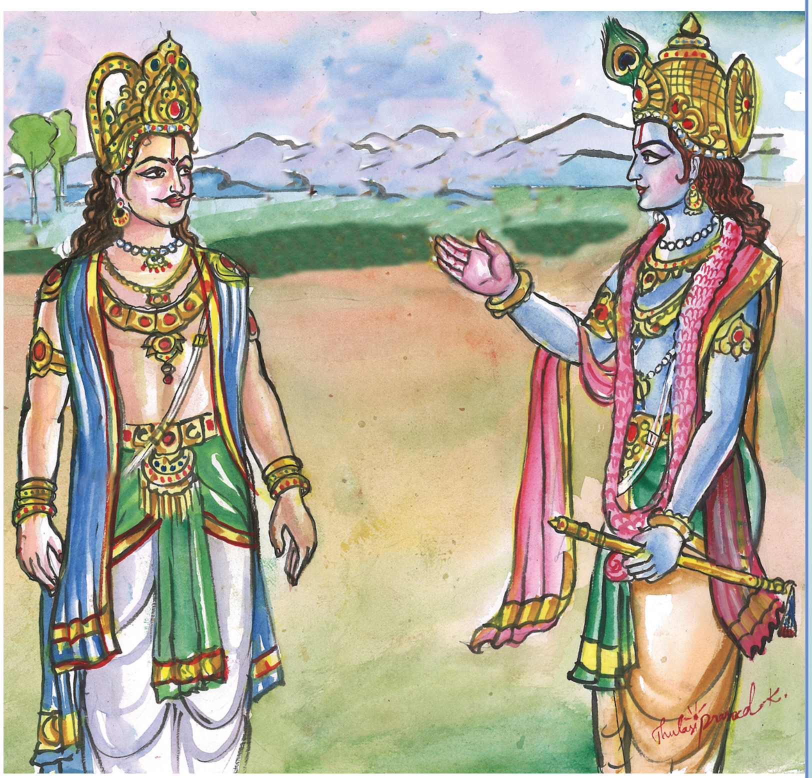

आखिर महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ। युद्ध में जीत पाने के बाद पांडव सब युद्ध मैदान में बडे गर्व से घूम रहे था। तब उन्होंने जमीन पर पडे हाथी के गले की घंटी को देखा। उस समय कृष्ण ने अर्जुन को देखकर कहा, ''हे अर्जुन! तुम उस घंटी को उठाओ।'' बात मानकर अर्जुन ने घंटी को ऊपर उठाया तो अंदर से गौरैया अपने बच्चों के साथ बाहर निकल पडा। यह देखकर उसे बडा आश्चर्य हुआ। वह गौरैया बाहर आकर कृष्ण के प्रणाम किया, जिन्होंने युद्ध काल में जो अठारह दिनों तक उसको और उसके बच्चों को घंटी में रखकर रक्षा की थी। कृष्ण ने बडी प्रसन्नता से उसे आशीर्वाद दिया।

तब अर्जुन ने उनके निकट आकर कहा, ''हे कृष्ण! मुझे माफ करना। पहले मैंने आपके कार्य पर यह सोचकर हँसी उडायी कि आपका निशान फिसल गया है। परंतु अब मालूम हो गया कि आपने मासूम जीवों की रक्षा करने के लिए ही ऐसा किया है। यह बात मैं अपनी मूर्खता के कारण समझ नहीं पाया। अब मुझे साफ मालूम हो गया कि आप सभी जीवों के प्रति अपनी करुणा एवं महानता दिखाते हैं।''

भगवान जानते हैं कि किसको, किसे और कैसे करना है। उनके कार्य के पीछे एक कारण जरूर होता है। कृष्ण ने अपने कार्य द्वारा अर्जुन को इसे समझाया।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- ☒ अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- ☒ भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- ☒ दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- ☒ मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- ☒ तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- ☒ पानी और बिजली को वृथा न करें।
- ☒ अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- ☒ पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- ☒ चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- ☒ भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- ☒ फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- ☒ तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- ☒ सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- ☒ विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

तिरुमल में निषेधित कार्य

- ⃠ तिरुमल में धूम्रपान, शराब, मांसाहार आदि निषेधित हैं।
- ⃠ अन्य मतों का प्रचार न करें।
- ⃠ पशु, पक्षी का वध निषेधित है।
- ⃠ तिरुमल में जुआ, पासा आदि को खेलना या अन्य खेलों में धन को बाजी लगाना निषेधित है।
- ⃠ भिखमंगों का प्रोत्साहन न करें।
- ⃠ तिरुमल में प्रईवेट व्यक्तियों द्वारा केशखंडन या कल्याणकट्टाओं (क्षुरकशाला) को चलाना निषेधित है।
- ⃠ आवास को अनधिकारिक तौर पर देना या लेना मना किया गया है।

चित्रकथा

बालहनुमान

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री के.तुलसीप्रसाद

सभी लोक काँप उठने लगे।
देवगण जाकर ब्रह्म से प्रार्थना की।
हे विधाता! आप ही रक्षा कीजिए।
सभी देवतागण वायु से मिलने केलिए गये। ब्रह्म ने कहा...
बेटा! अपना गमन को रोकने से सृष्टि को खतरा है।
फिर मेरा आंजनेय का विषय?
ब्रह्म अपने अमृत स्पर्श से आंजनेय को होश में लाया।
मेरा फल कहाँ है?
यह मेरा वर है कि मेरा ब्रह्मास्त्र तुम पर काम नहीं करेगा।
ब्रह्म ने कहा जबडा पर वज्रायुध से मार खाने के कारण यह बालक 'हनुमान' के रूप में प्रशस्त पायेगा।
देवताओं के अस्त्र-शस्त्र तुम पर काम नहीं करेगा।
वायुदेव शांत हुए। सारे लोक सांस ली।
हाय रे! बच गये।
अंजना ने अपने बालक को उठा कर प्यार की।
बेटा! हनुमान! जुग जुग जीओ!
अगली पत्रिका में... एक और कहानी के बारे में दर्शन करेंगे... तरेंगे!
स्वस्ति।

'क्विज'

आयोजक - कुमारी एन.प्रत्यूषा

१) लक्ष्मण को किसका अवतार माना जाता है?

अ) विष्णु आ) शिव इ) शेषनाग ई) ब्रह्मदेव

२) सुमति-कौशिकी ब्राह्मण दंपतियों के बेटा कौन है?

अ) विष्णुशर्मा आ) अग्निशर्मा इ) सुदर्शनशर्मा ई) हनुमंतशर्मा

३) विश्व योग दिवास कब मनाया जाता है?

अ) जून-२१ आ) मई-२१ इ) अगस्त-२१ ई) मार्च-२१

४) अभयहस्त से विराजित होनेवाले बालाजी का मंदिर कहाँ है?

अ) तिरुमल आ) श्रीनिवासमंगापुरम इ) अप्पलायगुन्टा ई) हैदराबाद

५) कुंती ने अपने नवजात शिशु को किस नदी में बहाया था?

अ) चर्मजनदी आ) अश्व नदी इ) गंगा ई) यमुना

६) आयुर्वेद के वैद्य चिकित्सा भगवान किसे मानते हैं?

अ) च्यवन आ) चरक इ) धन्वंतरी ई) सुश्रुत

७) हनुमान की माता का नाम क्या है?

अ) सत्यवती आ) चंदना देवी इ) छाया देवी ई) अंजनादेवी

जवाब

१) इ २) आ ३) अ ४) इ ५) आ ६) इ ७) ई

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

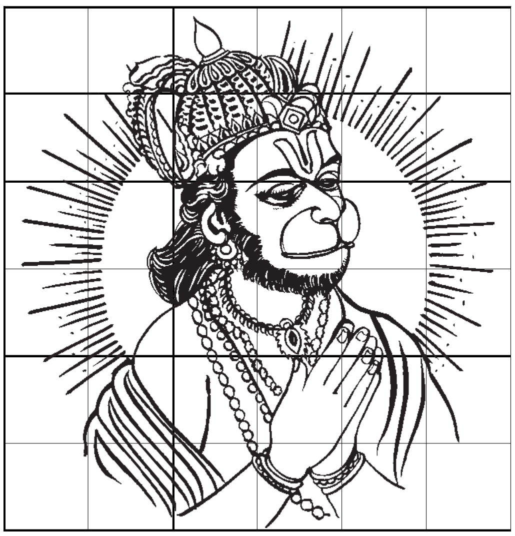

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Prof.K.Rajagopalan,** Ph.D., Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri P.Ramaraju,** M.A., Special Officer (Press & Publications), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

अप्पलायगुंटा
श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामीजी का
ब्रह्मोत्सव
२०२१, जून १९ से २७ तक

१९-०६-२०२१ शनिवार
दिन : ध्वजारोहण - रात : महाशेषवाहन

२०-०६-२०२१ रविवार
दिन : लघुशेषवाहन - रात : हंसवाहन

२१-०६-२०२१ सोमवार
दिन : सिंहवाहन - रात : मोतीवितानवाहन

२२-०६-२०२१ मंगलवार
दिन : कल्पवृक्षवाहन - रात : सर्वभूपालवाहन

२३-०६-२०२१ बुधवार
दिन : पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव - रात : गरुडवाहन

२४-०६-२०२१ गुरुवार
दिन : हनुमद्वाहन - रात : गजवाहन

२५-०६-२०२१ शुक्रवार
दिन : सूर्यप्रभावाहन - रात : चंद्रप्रभावाहन

२६-०६-२०२१ शनिवार
दिन : रथ-यात्रा - रात : अश्ववाहन

२७-०६-२०२१ रविवार
दिन : चक्रस्नान - रात : ध्वजावरोहण

जापालि आंजनेयस्वामी (तिरुमल)